१ओअंकार (੧ੳ) सतिगुर प्रसादि।।

न्यारा खालसा, हम हिन्दू नहीं

लक्ष्य

केवल सिक्ख समाज की युवा पीढ़ी को अपने स्वतन्त्र अस्तित्व के विषय में ज्ञान देना ही हैं।

प्रकाशक:

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)

लॉच करता

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेंबल ट्रंस्ट, चण्डीगढ़

सं जसबीर सिंघ

Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Download Free

न्यारा खालसा

सिख धर्म 'सर्वत्र का भला' की प्रार्थना करने वाला धर्म है। वह कभी भी अपने मन में किसी के बुरे का चितवन नहीं करता। सिख गुरबाणी के इन महावाक्यों पर अपने जीवन का निर्माण करता है :

- एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई।। (पृ ६११)
- सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ।। (धनासरी महला ५, पृ ६७१)
- एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे।। (पृ 134)
- तुमरी कृपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ।। (देव गंधारी महला ५, 529)
- मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ।। (वडहंस महला 1, पृ 566)
- मन अपुने ते बुरा मिटाना ।।

  पेखै सगल स्रिसटि साजना ।। (सुखमनी महला ५, 266)

सिख धर्म देश-काल की सीमाओं को भी नहीं मानता। उनके लिए तो सारा संसार, सारी मानवता ही उस करतार प्रभु रचना है और एक पिता के पुत्र होने के कारण उसके लिए कोई देशवासी गैर नहीं। सिख का तो विश्वास ही यही है:

न को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बिन आई ।। (कानड़ा महला ५, १२९९)

इस संसार मे रहते हुए, एक पिता की संतान होने के कारण, सिख की किसी के संग कोई शत्रुता नहीं। कोई नफरत नहीं। परंतु धार्मिक जीवन शैली, रहन-सहन की रीतियों, सूरत, खान-पान, इष्ट, उपासना आदि भिन्न व न्यारी होने के कारण, सिख दूसरी कौमों - मुसलमान, इसाई, यहूदी, बौद्ध आदि की भांति एक अलग व स्वतंत्र कौम है। सिख धर्म, हिन्दू धर्म से बिल्कुल भिन्न है। अब जब कि सिख रहन-सहन की रीतियां, पंथक मर्यादा, पंच की हस्ती व विचार प्रणाली फिर ब्राहमणी धर्म की अमर बेल के नीचे और हिंदू प्रभावी साम्राज्य के दबाव के कारण, निर्बल पड़ रही है तो खालसा पंच के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपनी मूल विरासत के संग फिर से जुड़े और नूरानी जीवन के स्पर्श से नव-जीवन प्राप्त करे। इस तरह बल धारण करके अपनी जिम्मे पंथ की सृजना के समय की लगी सेवा, और गुरु साहिबान के दिखाए मार्ग व निश्चित किये गये लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर तेजी से बढ़े। खालसा जी का मनोरथ, अपनी हस्ती कायम रखते हुए आध्यात्मिक तौर पर :

आपि जपै अवरह नामु जपावै ।।

है और व्यावहारिक तौर पर, ऐसे समाज की सृजना करना है जहां पर :

सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ।। (पृ ७४)

वाला व्यवहार हो। सिख ने गुरू साहिबान जी का अपना निर्धारित किया गया यह लक्ष्य प्राप्त करना है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु, गुरू साहिबान ने संगत और धर्म पंथ की सृजना की थी। समूह खालसा पंथ के लिए, गुरू साहिबान द्वारा स्थापित नहीं मनोरथ है। यही वह अंतिम लक्ष्य है जिस को खालसा पंथ अपना न्यारा और शुद्ध स्वरूप रख कर ही पूरा करते हुए आगे बढ़ सकता है।

पंथ के न्यारे स्वरूप की शिक्षा का सबक दुरहाने के लिए, इस लघु पुस्तिका का बार-बार अध्ययन करना जरूरी है ताकि खालसा गुरू का बने और खालसा जी पर गुरू प्रतीति लाये। इसलिए खालसा गुरू तेजस्व प्राप्त करके, अपने स्वरूप व पहरावे की लाज रखते हुए अपने कर्तव्य पूर्ति की ऊंचाइयों की ओर अगांह कू त्रांघ पर अमल करते हुए नित्य आगे बढ़ता चले।

जब लग खालसा रहे निआरा ।।

तब लग तेज दीओ मैं सारा ।।

जब इह गहै बिपरन की रीति ।।

मैं न करउं इन की प्रतीत ।।

श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी महराज ने एक बार गधे को शेर की खाल पहना कर जंगल में छोड़ दिया। सभी लोग व पशु उसको शेर समझ कर इतना डरने लगे कि कोई उस के पास न जाए। वह भार उठाने के कष्ट से छुटकारा पा कर मन भावन वनस्पति का सेवन कर, मोटा ताजा हो गया। अनंद पुर के आस-पास आनंद से घूमने लगा। पर एक दिन अपने साथियों की हेकने की आवाज को सुन कर, वह कुम्हार के घर को भाग उठा और अपने निश्चित स्थान, खुरली-किल्ले पर जा खड़ा हुआ। कुम्हार ने उस को अपना गधा पहचान कर, शेर की खाल ऊपर से उतार दी और भार लाद कर लट्ठ लगा कर आगे लगा लिया।

इस दृष्टांत से कलगीधर महाराज जी ने अपने प्यारे सिखों को उपदेश दिया कि, हे मेरे सपुत्रो! मैंने तुम्हे इस गधे की तरह केवल नाम मात्र का शेर नहीं बनाया। बल्कि गुणकारी, सर्वगुण-संपन्न, जात-पात के बंधनों से मुक्त, अपनी संतान बना कर, साहिब कौर जी की गोदी से डाला है। अब आपने अज्ञानवश, इस गधे की भांति पुरानी जात-पात में विश्वास नहीं करना है। यदि मेरे उपदेश को भुला कर, पवित्र खालसा धर्म त्याग कर, उन जातियों में ही जा शामिल होवोगे जिनमें से मैने तुम्हें उबार कर निकाला है, तो आपकी दशा इस गधे जैसी होगी और आपकी धर्म निष्ठा और शूरवीरता सब क्षीण होते रहेंगे।

हमारे बीच में बहुत से ऐसे लोग है जो सतगुरू के इस उपदेश से मुंह मोड़े हुए है। सिख हो कर भी अपने आप को हिन्दू मानते है। स्वयं गुरबाणी के अनुकूल जीवन मार्ग पर चलने और सिख धर्म को हिंदू धर्म से भिन्न और शिरोमणी मानने व कहने से हानि समझते है। इसका कारण यही है कि उन्होंने अपनी धर्म पुस्तकों का अध्ययन नहीं किया है। अपना प्राचीन इतिहास नहीं पड़ा है। केवल पराधर्मी और प्रपंचवादी शिक्षा सुनने में आयु व्यतीती कर दी है। पर शोक है ऐसे भाइयों पर जो परमपूज्य पिता के उपकारों को भूल गए जिस ने नीचों से ऊंचा किया, कंगाल से राजा बना दिया, गीदड़ों से शेर और चिडियों से बाज बना दिया हम गुरमत विरोधियों के पीछे लग कर पाखंड जाल में फंस कर अपना मानव जीवन हारते हुए, खालसा धर्म से पतित हो रहे है।

इस पुस्तक में हमने केवल हिन्दू धर्म से ही खालसा की तुलना करने का विषय लिया है। कारण यही है कि दूसरे धर्मों से पहले ही बंधुवर अपने आपको भिन्न समझते है। पर अज्ञानवंश अधिकांश लोग, खालसा को हिंदू अथवा हिंदुओं का ही एक संप्रदाय समझते है। उनको याद रखना चाहिए कि सिख धर्म, हिन्दू धर्म से भिन्न है :

– ना हम हिंदू, न मुसलमान ।।

– हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ।।

नारदि कहिआ सि पूज करांही ।। (वार बिहागड़ा, महला ३, पृ५५६)

– हमरा झगरा रहा न कोऊ ।। पंडित मुलां छाडे दोऊ ।।

पंडित मुलां जो लिखि दीआ ।। छाडि चले हम कछू न लीआ।। (भैरउ, कबीर जी, ११५८)

– हिदू अंनहा तुरकू काणा ।। दुहां ते गिआनी सिआणा ।।

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमान मसीति ।।

नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ।। (गौंड, नामदेव जी, पृ ८७५)

– अलह एकु मसीति बसतु है, अवरु मुलखु किसु केरा ।।

हिन्दू मूरति नामु निवासी, दुह महि ततु न हेरा ।। (प्रभाती, कबीर जी, पृ १३४९)

– कबीर, बामन गुरू है जगत का, भगतन का गुरु नाहि ।।

अरझि उरझि के पचि मूआ, चारउ बेदहु माहि ।। (सलोक कबीर जी, पृ 1377)

– लोक बेद गयान उपदेश है पतिव्रता को, मन बच क्रम स्वमी सेवा अधिकार है ।।

नाम इश्नान दान संयम न जाप ताप, तीरथ बरत पूजा नेम नतकार है ।।

होम जग्ग भोग नइवेद नहीं देवी देव, राग नाद बाद न संवाद आनद्वार है।

तैसे गुरू खिन में एक टेक ही प्रधान, आन गयान ध्यान सिमरन विभचार है।।

(कबित, भाई गुरदास जी)

– जागत जोति जपे निस बासुर, एक बिना मन नेक न आने ।।

पूरन प्रेम प्रतीत सजै, ब्रत गोर मढ़ी मट भूल न माने ।।

तीरथ दान दया तप संजम, एक बिना नहि एक पछानै ।।

परम ज्योति जगै घट मै, तब खालस तांहि नखालस जाने ।। (33 सवैये)

खालसा हिंदू मुसलमान से निआरा रहे ।। (रहितनामा भाई चौपा सिंघ)

खालसा हिंदू मुसलमान की काण को मेटे ।। (रहितनामा भाई दया सिंघ)

अन्य मतों से सिख धर्म के न्यारे व भिन्न होने का निर्णय :

(1) **मंत्र :** हिंदुओं का गायत्री मंत्र, मुसलमानों का कलमा, सिख धर्म का हिन्दुओं की भांति कोई मंत्र नहीं। अकालपुरख के गुणों की व्याख्या वाला से लेकर गुरप्रसादि तक सिखी का मूल मंत्र हें जाप करने के लिए वाहिगुरू गुरमंत्र है।

(2) **मंगलाचरण :** हिंदुओं का ऊँ श्री गणेशाए नमः आदि, मुसलमानों का बिसमिल्ला आदि, सिखों का ३ (इक ओऽअंकार) सतिगुर प्रसादि ।।

(3) **मुलाकात के समय का अभिवादन :** हिन्दुओं का राम–राम, नमस्ते आदि, मुसलमानों का सलाम, और सिखों में वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतेह बुलाई जाती है।

(4) **धर्म पुस्तक :** हिंदुओं की वेद, मुसलमानों की कुराण, सिखों का गुरू ग्रंथ साहिब ।

(5) **तीर्थ :** हिंदुओं को गंगा, गया, प्रयाग आदि, मुसलमानों के मक्का मदीना, सिखों का हिंदु मत की भांति कोई तीर्थ नहीं – बल्कि परमात्मा का नाम ही शिरोमणी तीर्थ है। सिखों के केंद्रीय स्थान अमृतसर, सारे तख्त व इतिहासिक गुरद्वारे है।

(6) **पूजा स्थान :** हिंदुओं के ठाकुरद्वारे, शिवालय आदि, मुसलमानों की मस्जिद, सिखों के गुरूद्वारे व धर्मशालाएं।

(7) **पूजा करने की दिशा :** हिन्दुओं की पूर्व, मुसलमानों की पश्चिम, सिखों के लिए चारों दिशाएं एक समान है।

(8) **स्नान का समय :** हिंदुओं का सूर्य चढ़ने के समय, मुसलमानों का वुजू निमाज़ से पूर्व, सिखों का स्नान अमृतबेला में।

(9) **संध्या :** हिन्दुओं की गायत्री पढ़ कर और तर्पण करके, मुसलमानों की निमाज़ पढ़ कर, सिखों की जपु, जापु, सवैये

रहरसि और सोहिला पढ़ कर।

(10) **संस्कार :** हिन्दुओं के जनेऊ, मुंडन आदि, मुसलमानों के सुन्नत, सिखों का अमृतपान करना।

(11) **चिन्ह :** हिंदूओं की बोदी, तिलक, माला, जनेऊ, धोती, मुसलमानों की शरई मूछें, तंबा आदि, सिखों का केश, कंघा, कड़ा कृपाण, कछैहिरा, पांच ककारी रहित आदि।

(12) **पूज्य :** हिन्दुओं के ब्राहमण संन्यासी, मुसलमानों के सैयद मौलवी, सिंखों के गुरू खालसा ।

(13) **बड़े दिन :** हिन्दुओं के जन्म अष्टमी, रामनौमी आदि। मुसलमानों के ईद बकरीद आदि, सिखों के गुरपुरव व इतिहासिक दिन।

(14) **भेट –प्रशाद :** हिंदुओं का चूरमा, लड्डू, फल आदि, मुसलमानों के दुंबे, बकरे आदि की कुर्बानी, सिखों का कड़ाह प्रशाद ।

हमारे देश में हर किसी को धार्मिक स्वतंत्रता है कि वह अपनी इच्छानुसार अपने–अपने धर्म के निश्चय रखे। पर किसी पर जबर्दस्ती अपना धर्म ठोसना अनुचित व धार्मिक अनुशासन व नैतिकता के विरूद्ध है। कई हिंदू सज्जन, जो सिख पंथ की उन्नति को नफरत व जलन की संकीर्ण दृष्टि से देख कर सहन नहीं कर सकते, वे अक्सर यह कहते हुए सुने जात है कि सिख हिंदुओं से न्यारे नहीं। क्योंकि सिख हिंदुओं में से निकले हे, उनका खान–पान हिंदुओ के साथ है, उनके साथ रिश्ते नाते हैं और वे हिंदुस्तान के निवासी है, तो फिर सिख हिंदुओं से एक भिन्न कौम कैसे हो सकते है?

इस का उत्तर यह है कि सिखों को इस उपरोक्त प्रकार की हिंदू मानसिकता वाले सज्जनों के कारण ही, विशेष तौर पर अपने आप को, भिन्न व न्यारा कहने की आवश्यकता पड़ती है। अन्यथा जंगल के शेर को यह कहने की क्या जरूरत है कि वह शेर है। शेर तो नि:संदेह ही बाकी जानवरों से भिन्न है और अपना न्यारा अस्तित्व रखता है। शेर की विशेषताएं ही उसके न्यारे होने का प्रत्यक्ष व अकाट्य प्रमाण है।

सिंख का हिंदू मत से न्यारे होने का प्रमाण, गुरबाणी के दृष्टांतों द्वारा पहले दर्शाया जा चुका है। जो लोग सिखों को इसलिए हिंदू समझते हैं कि सिख हिंदुओं में से निकले हैं, यह उनकी भूल है। क्या इसाइयों को जो यहूदियों (Jews) में से निकले हैं, मुसलमानों को जो कुरेशी इसाई (Colly Ridiens) ओर यहूदी आदि में से निकले है, यहूदी कहा जा सकता है?विशेषकर जो हिंदुस्तानी, हिंदुओं में से निकले इसाई और मुसलमान बने हैं, क्या उनकी हिंदू कहा जा सकता है या ऐसे बने इसाई व मुसलमान क्या अपने आप को हिंदू कहलवाने को तैयार होंगे?

यदि खान–पान के दृष्टिकोण से सिखों को हिंदू माना जाता है तो यहूदी, इसाई, मुसलमान, बौद्ध और पारसी आदि का भी खान–पान इकट्ठा ही होता है – क्या केवल इसलिए कि वे सारे मजहवी रीति के अनुसार एक कहे जा सकते है। खान–पान के विषय पर सिखों और हिंदुओं में कितना भेद है, सिख धर्म की पुस्तकों के नीचे दिये गए सिद्धांत पढ़न योग्य है :

–मोने कर अहार नहि खाना ।। (गुर प्रताप सूरय)

रसाईओ सिख रखे । (रहितनामा भाई चौपा सिंध)

जहां तक रिश्ते–नाते करने का प्रश्न है, उसके लिए सिख धर्म की, सिखों को आज्ञा है कि :

–नाता गुरू के सिख नाल करे ।। (रहितनामा भाई चौपा सिंध)

कन्या को मारे, मोने को कन्या देवे सो तनवाहीआ ।।

–सिख को सिख पुत्री दई सुधा सुधा मिल जाइ।।

दई भादणी को सुता अहि मुख अमी चुआइ ।। (रहितनामा भाई देसा सिंघ)

भाव: सिख के अतिरिक्त किसी अन्य मत के धारणकर्ता के संग अपनी पुत्री का विवाह करने ऐसे है जैसे सांप को दूध (अमृत) पिलाना है। भाव यह है कि इष्ट एक न होने के कारण पति और पत्नी का परस्पर पूर्ण प्रेम नहीं होता जो गृहस्थ के निर्वाह में महा – अवरोधक है और असिख, सिख कन्या को भी सिख धर्म में पतित कर देता है।

सिख की पुत्री का संयोग ऐसी कुल में करें जहां पर सिखी अकाल पुरख की हो । (प्रेम सुमार्ग)

कंनिआं देवे सिख को लेवै नहिं कुछ दाम ।।

सोई मेरा सिख है पहुंचे गो मम धाम ।। (गुरप्रताप सूरय)

यदि हिंदुस्तान में रहने के कारण सिखों को हिंदू समझा जाता है तो इसाई, मुसलमान आदि पराधर्मी जो इसी देश में रहते है, को हिंदू क्यों नहीं समझा जाता ।

खालसा पंथ को हिंदुओं से भिन्न और न्यारे सिद्ध करने के लिए हिंदू मत के नियमों का खुलासा और खालसा पंथ के न्यारे व स्वतंत्र अस्तित्व के सिद्धांतों का यहां पर उल्लेख किया जाता है। इनसे पता चल जाएगा कि सिख का धर्म, इष्ट, उपासना खान – पान, एक भिन्न कौन के तौर पर है।

(1) वेद, स्मृति व पुराण

हिंदू वेदों को ईश्वर के श्वास नितय और समृति पुराण आदि पुस्तकों को अपने धर्म का आधार मानते है। पर सिख केवल गुरू ग्रंथ साहिब को अपनी धर्म पुस्तक मानते है और उस के आशय के अनुसार जो साखियां आदि धर्म पुस्तकों में है, उनको मानते हैं। गुरसिखों के लिए सतगुरू जी का यह आदेश है :

– सभसै उपरि गुर सबदु बीचारु ।।

होर कथनी बदउ न, सगली छारु ।। (रामकली असटपदी महला ४, पृ ३०४)

– सतिगुर की बाणी सति सति कर जाणहु गुर सिखहु हरि करता आपि महहु कढाए ।।

(गउड़ी की वार महला ४, पृ ३०८)

– पंडित मैलु न चुकई जे वेद पढ़ै जुगि चारि ।। (सोरठि महला ३, पृ ६४७)

– बेद कतेब संसार हभाहूं बाहरा ।।

नानक का पातिसाहु दिसे जाहरा ।। (आसा महला ५, पृ ३९७)

– बेद कतेब सिम्रिति सभि सासत

इनृ पढ़िआ मुकति न होई ।। (सूही महला ५, पृ ७४७)

– बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ।। (तिलंग कबीर, पृ ७२७)

– पढ़े रे सगल बेद, नह चूके मन भेद,

इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ।। (धनासरी महला ५, पृ ३८७)

– पढ़ पढ़ पंडित मोनी थके वेदां का अभिआस ।।

हरिनामु चिति न आवई, नह निज धरि होवै वासु ।। (मलार महला ३, पृ १२७७)

कई हिंदू, नीचे दी गई पंक्ति सुना कर कहते हैं कि गुरू ग्रंथ साहिब में वेदों की महिमा गाई गई है :

वेदा महि नामु उतमु सो सुणाहि

नाहि फिरहि जिउ बेतालिआ ।। (अनंद साहिब, पृ 919)

इस पंक्ति में वेदों की महिमा का गायन नहीं किया गया बल्कि यह बताया गया है कि वेदों में यज्ञ और हवन आदि कर्मकांडों का विस्तृत वर्णन है, जिस को हिंदू लोग करते हैं। पर कहीं कहीं नाम मात्र ही प्रभु के नाम की भी बात की गई है। जो नाम उत्तम है उस को अज्ञानी लोग सुनते समझते नहीं, बल्कि हवन आदि व्यर्थ कामों में बेतालों की तरह भटकते फिरते हैं। अत: इस पंक्ति में गुरू साहिब ने वेदों को उत्तम नहीं बताया, वाहिगुरू के नाम को उत्तम बताया है। वेदों के पठन पाठन के बारे में गुरू नानक देव जी का उपदेश है :

बेद पाठ संसार की कार ।।

पढ़ि पढ़िह पंडित करहि बीचार ।।

बिनु बूझे सभ होइ खुआर ।। (वार, सूही महला १, वृ ७९१)

(2) जाति पात और वर्ण व्यवस्था

हिंदु मात जात पात है के वर्ण भेद में भारी विश्वास करता है। इसके विपरीत सिख धर्म में इसके लिए कोई स्थान ही नहीं हैं। यहाँ हिंदू धर्म की पुस्तकों में से इस बारे में कुछ संदर्भ दिये जाते है जिस से पता चलता है कि इस जात पात व वर्ण भेद ने, समाज की क्या दूर्दशा की है।

संसार में जितना धन है, सभ ब्राहमण का है। ब्रहमा के मुंह से पैदा होने के कारण सब कुछ ग्रहण करने योग्य, ब्राहमण है। ब्रहामण जो दूसरे का अन्न खाता है, कपड़ा पहनता है या किसी की वस्तुएं दूसरे को दे देता है, तो इसका यह भाव न समझें कि ब्रहामण किसी की वस्तु का प्रयोग करता है या नहीं। यह जो कुछ संसार में है, सब कुछ ब्राहमण का ही है।

(मनू अ १, सलोक १०० अर १०१)

यदि राजा को दबा हुआ धन मिल जाए तो उस में से आधा वही स्वयं रखे और आधा ब्राहमण को दे। (मनू अ, स: ६)

मूर्ख हो चाहे पढ़ा हो, ब्राहमण बड़ा देवता है, जिस प्रकार मंत्रों से संस्कार किया हुआ हो, चाहे बिना मंत्रों के ही अग्नि देवता है। (मनू अ ९, श: ३४७)

ब्राहमण जो चोरी करे, तो राजा उस को सजा न दे, क्योंकि राजा की ही नालायकी के कारण ब्राहमण भूखा हो कर चोरी करता है। (मनु अ ७७ सं: २२)

ब्राहमण बदचलन भी पूजा योग्य है, शूद्र जितेंद्री भी पूजा योग्य नहीं, कौन खट्टर गाय को छोड़ कर सुशील गधी का दोहन करता है। (परासर संहित, अ ६)

खेती करने वाला ब्रहामण जितनी जमीन चाहे जोत ले और किसी को लगान आदि कुछ न दें, क्योंकि सभी वस्तुओं का मालिक ब्राहमण ही है। (बृहत परासर संहिता,अ ३)

ब्राहमण वेद के विरुद्ध कर्म करके भी दोषी नहीं होता। जिस प्रकार अग्नि सभी पदार्थों को भस्म करते हुए और स्त्री यार के साथ संभोग करके भी दूषित नहीं होती । (बृहत परासर संहिता, अ 2, और देखें अत्रि संहिता)

अब ब्राहमण की तुलना में शूद्र की दुर्दशा देखें :

शूद्र के राज्य में नहीं रहना चाहिए । (मनु अ ४)

शूद्र को मति न दें, होम से बचा हुआ अन्न न दें, और शूद्र को धर्म का उपदेश न करें। (मनू अ: ४, श: ८०)

पैरों से जन्मा हुआ शूद्र यदि ब्राहमण, क्षत्रीय, वैशय को कठोर वचन बोले, तो राजा उस की जीभ कटवा दे ।

(मनु अः ८, शः २७०)

यदि शूद्र द्विजातियों को नाम ले कर कठोरता से बुलाए तो उस के मुंह में दस उंगनी लंबा लोहे का किल्ला, आम जैसा लाल करके ठोक दें। जो शूद्र अभिमान करके ब्राहमण को धर्म का उपदेश करे, तो राजा उस के मुंह और कानों में गर्म तेल डलवा दे ।

(मनु अ ८ शः २७१)

शूद्र अपने जिस – जिस अंग में द्विजातियों को प्रताड़ित करे उस का वही – वही अग कटवा देना चाहिए। (मनु अ ८ शः २७१)

समर्थ हो कर भी शुद्र धन जमा न करे, क्योंकि शुद्र धनी हो कर ब्राहमणों को दुख देने लग जाता है। (मनु अ ८ शः ७१)

शुद्र का अन्न लहू के बराबर है और यदि शूद्र का अन्न पेट में होते भोग करके, तो जो औलाद पैदा होगी वह शूद्र ही समझी जाएगी ।

(लघु अत्रि संहिता, अ ५)

जो शूद्र जप होम करे राजा उस को मरवा दे । (अत्रि संहिता)

ऐसी तालीम का असर श्री राम चंद्र जी के मन पर यह हुआ कि एक तप करते हुए शुद्र को मार दिया, जिस का प्रसंग इस प्रकार है :

एक ब्राहमण का लड़का इसलिए मर गया कि शूद्र वन में तप कर रहा था। रामचंद्र जी ने वन में पहुंच कर उस तपी शूद्र को पूछा, 'तू कौन है?' उसने कहा, 'हे राम! मैं शंबूक नामक शूद्र हूं और स्वर्ग की इच्छा करके तप कर रहा हूं।' इतना सुनते ही राम चंद्र जी ने म्यान में से तलवार सूत कर शंबूक का वध कर दिया। इस पर आकाश में सारे देवता उतर आए। राम चंद्र जी पर फूल बरसा कर कहने लगे, 'हे राम! तूं धन्य है, तूं धन्य है, तूने यह देवताओं का भारी काम किया है और बड़ा पुन्य कमाया है कि स्वर्ग की इच्छा करने वाले शूद्र को काट दिया । अब जो तेरी इच्छा है, हमसे वर मांग।'

राम चंद्र जी ने कहा, हे देवगण, यदि आप प्रसन्न हो तो यह वर दो कि ब्राहमण का लड़का जी उठे।' देवताओं ने कहा, 'हे राम! वह तो तब ही जिंदा हो गया है, जब तूने शूद्र का सिर काटा था।' (देखे, वाल्मीकी रामायण, उत्तर कांड ७६)

यदि शुद्र पंच गवय पीवे तो नर्क को चला जाता है। (विष्णु समृति अ ५४)

शुद्र का अन्न खा कर ब्राहमण सात जन्म कुत्ता होता है नौ जन्म सूअर बनता है, आठ जन्म गींध बनता है।

(आपसतंब स्मृति अ : २)

यदि शुद्र का अन्न पेट में हो और उस समय ब्राहमण मर जाए, तो गांव का सूअर या कुता बनता है।

(आपसतंब स्मृति अ 2)

कपिला गाय का दूध पीने से और वेद के अक्षर की विचार करेन से शूद्र को जरूर नर्क होता है। (पराशर संहिता, अ २)

शूद्र को अक्ल न सिखलाओ, धर्म का उपदेश न करो, और व्रत आदि न बताओ। जो शूद्र को ये बातें सिखलाता है, वह शूद्र संहित अंधकूप में जा गिरता है। (वशिष्ट संहिता, अः १८)

जाति पाति के विरूद्ध सतगुरू के पवित्र वचप्न :

– फकड़ जाती फकडु नाउ ।। सभना जीआ इका छाउ ।। (वार स्री राग महला १, पृ ८३)

– जाणहु जोति न पूछहु जाती, अगे जाति न हे। (आसा महला १, पृ३४९)

– अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे,

जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ।। (वार आसा महला १, पृ४६९)

– जाति जनमु नह पूछीअै, सच घरु लेहु बताइ ।।

सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ।। (प्रभाती महला १,पृ १३३०)

– अगे जाति रूप न जाइ ।।

तेहा होवै जेहे करम कमाइ ।। (आसा महला ३)

– पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ।।

बरन जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ।। (गूजरी महला ५, पृ ४९७)

गरभवास महि कुलु नही जाती ।।

ब्रहमबिंदु ते सभ उतपाती ।।

कहु रे पंडित बामन कब के हुए ।

'बामन' कहि कहि जनमु मत खोए ।।

जौ तूं ब्राहमण ब्रहमणी जाइआ ।।

तउ आन बाट काहे नहीं आइआ ।।

तुम कत ब्राहमण, हम कत सूद ।।

हम कत लोहू, तुम कत दूध ।। (पृ ३२४)

– हिंदू तुरक कोऊ राफज़ी इमाम साफी

मानस की जाति सभे ऐकै पहिचानवो ..... (अकाल उस्तति पा: १०)

जब कलगीधर पातशाह ने खंडे बांटे का अमृतापन करवा कर जाति पाति के भेदभाव को दूर करके, सब को खालसा सजा दिया तो पहाड़ी राजा बहुत दुखी हुए । जब गुरू साहिब ने पहाड़ी राजाओं को सिख बनने का उपदेश किया तो पहाड़ी राजाओं ने यह बात कही कि वे अमृतपान करने को तैयार हैं, पर यह अमृत पान करवाने का बाटा, नीच जातियों के लोगों के लिए भिन्न व हमारे लिए भिन्न होना चाहिए । तो गुरू साहिब ने उत्तर दिया कि अमृतपान करवाना ही इसलिए है कि जाति पाति का भिन्न भेद समाप्त हो जाए। यदि बाटा भिन्न तैयार किया तो फिर अमृत पान करवाने का मनोरथ ही क्या रह गया ।

अत: सिख धर्म से जाति पाति व वरणभेद के लिए कोई स्थान नहीं है।

(3) अवतार

हिंदू मत में अवतारों को इश्वर मान कर उनकी उपासना की जाती है। पर सिख धर्म अवतारवाद को नहीं मानता। सिख धर्म का उपदेश तो यह है कि अकालपुरख अयोनी है। वह जन्म व मृत्यु के भंवर में नहीं आता है। इसलिए उपासना केवल अकाल पुरख, एकीश्वर की ही हो सकती है। नीचे दिए गए प्रमाणों से सिखी का यह सिद्धांत निश्चित होता है।

– अवतार न जानहि अंत ।। परमेशर पारब्रहम बेअंत ।। (रामकली महला ३)

– सो मुख जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ।। (भैरउ महला ५, पृ ११३६)

– जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ।।

तिन भी अंतु न पाइआ ता का, किआ करि आखि वीचारी ।। (आसा महला ३, पृ ४१३)

– दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधुता ।।

तिन्ह भी अंतु न पाइओ तेरा लाइ थके विभूता ।। (सूही महला ५, पृ ७४७)

– बिन करतार न किरतम मानो ।।

आदि अजोनि अजे अबिनासी तिह परमेश्वर जानो ।। (राग कलिआन पा: १०)

– अंत मरे पछताइ प्रिथी पर जे जग में अवतार कहाए ।।

रे मन, लैल! इकेल ही काल के लागत काहि न पाइन धाए ।। (३३ सवैये पा: १०)

गुरबाणी के अर्थो में कई अनजान हिंदू, सिखों को इस तरह भ्रमित करते है कि गुरू ग्रंथ साहिब में राम, कृष्ण, दामोदर आदि अवतारों के नाम का प्रयोग करके महिमा गाई गई है, जैसे कि वे अक्सर नीचे लिखे शबद का संदर्भ देते हैं:

मधुसूदन दामोदर सुआमी,

रिखीकेस गोवरधनधारी मुरली मनोहर हरि रंगा ।।

मोहन माधव कृसन मुरारे ।।

जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ।।

धरणीधर ईस नरसिंघ नराइण ।।

दाड़ा अग्रे प्रिथमि धराइण ।

बावन रूप कीआ तुधु, करते ..... (पृ १०८२)

पर सिखों को हिंदू सिद्ध करने की वृत्ति वाले हिंदू यह भूल जाते है कि इसी शबद के अंत में गुरू अर्जुन देव जी अपना मत प्रकट करते हुए कहते हैं :

किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ।।

सति नामु तेरा परा पूरबला ।।

महाराज कहते हैं कि हे अकालपुरख! उपरोक्त लिखे तेरे कृत्रिम नाम की कल्पना करने लोग अपनी बुद्धि और निश्चय के अनुसार आप के बारे में वर्णन करते हैं। पर यह तेरे असल नाम नहीं, तेरा आदि और शिरोमणी नाम सत्य है। इसका अर्थ है कि हर समय में एक रस होने वाला। जिसकी व्याख्या गुरू नानक साहिब ने इस प्रकार की है :

आदि सचु, जुगादि सचु ।।

है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।

गुरबाणी में अनेक नाम ऐसे भी हैं जो खास – खास अवतार और देवताओं से संबंध रखते हैं, पर वही नाम अनेकों स्थानों पर गुरू साहिबान ने वाहिगुरू के अर्थ में भी प्रयोग किये हैं। इस अर्थ भेद को न समझने के कारण ही अज्ञानी लोग गुरबाणी के तत्व से खाली रहते हैं। नीचे लिखी गई पंक्तियों में राम, महेश, ब्रहमा, विशन आदि शब्द, अवतार व देवताओं के लिए प्रयोग किए गए हैं।

– नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ।। (पृ ४६४)

– रोवै रामु निकाला भइआ ।। (पृ ९५३)

– ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी .....।। (पृ ७३५)

परंतु नीचे अंकित पंक्तियों में राम पद वाहिगुरू के अर्थों में प्रयोग किया गया है।

– सभै घट रामु बोलै राम बोलै ।।

राम बिना को बोले रे ।। (पृ ९८८)

– रमत रामु सभ रहिओ समाइ ।। (पृ ८६५)

(4) देवी देवता

हिंदू मत में देवी और देवताओं को वर देने वाले मान कर उन की उपासना की जाती है। देवी देवताओं के इतने भेद कल्पित किए हुए हैं कि कोई हिंदू विद्वान भी, पूरी–पूरी गिनती करके नहीं बता सकता कि कितने देवी देवता हैं। परंतु सिख धर्म में देवी देवताओं की पूजा का निषेध किया गया है। केवल अकालपुरख, एकीश्वर, एक प्रभु की पूजा व सुमिरन ही दृढ़ करवाया गया है। जैसे कि गुरबाणी के नीचे दिए गए प्रमाणों से स्पष्ट है :

– माइआ मोहे सभ देवी देवा ।। (गउड़ी महला ३)

– भरमे सुरि नर देवी देवा ।। (गउड़ी महला ५, पृ २५८)

– देवी देवा पूजीअै भाई किआ मागउ किआ देहि ।। (सोरठि महला ५, पृ ६३७)

– जिनि कीए तिसहि न चेतहि बखुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई ।। (सूही महला ४,७३५)

– कोटि देवी जाकउ सेवहि, लखमी अनिक भांत ।।

गुपति प्रगट जाकउ अराधहि, पउण पाणी दिनसु राति ।। (आसा छंत महला ५, पृ ४५६)

– ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ।। अवरु न दीसै एको सोई ।। (पृ १०३५)

– कोटि सूर जा के परमास ।। कोटि महादेव अरु कबिलास ।।

दुरगा कोटि जा के मरदनु करै। ब्रहमा काटि बेद उचरे ।।

जउ जाचउ तउ केवल राम ।। आन देव सिउ नाही काम ।। (भेरउ कबीर जी, पृ ११६२)

– महिमा न जानहि बेद ।। ब्रहमे नही जानहि भेद ।।

– संकरा नही जानहि भेद ।। खोजत हार देव ।।

देवीआ नहीं जाने मरम, सभ ऊपरि अलख पारब्रहम ।। (रामकली महला ५)

गुरू का सिख मट–बुत, तीर्थ, देवी–देवता, व्रत–पूजा, मंत्र–जंत्र, पीर–ब्राहमण, तर्पण–गायत्री, किसी पर भी चित देवै नहीं।। (रहितनमा भाई दया सिंघ जी

तू कहीअत ही आदि भवानी । मुकति की बरीआ कहा छपानी ।। (गोड नाम देव जी, पृ ८७४)

भाई गुरदास जी गुरसिखों को प्रभु की उपासना का उपदेश देते हुए देवी देवता की पूजा का निषेध करते हैं :

जैसे पतिव्रता पर पुरखै न देखयो चाहै

पूरन पतिव्रता को पति ही में ध्यान है ।

सर सरिता समुद्र चात्रिक न चाहै काहूं ।।

आस घन बूंद प्रिय प्रिय गुन गान है।।

दिन कर ओर भोर चाहत नहीं चकोर

मन बच क्रम हिमकर प्रिय प्रान है ।।

तेसे गुरु सिख आन देव सेव रहित

पे सहिज सुभाव न अवज्ञा अभिमान है।।

इसी प्रकार एक और कबित्त के अंत में भाई साहिब बताते है :

गुरसिख होइ आन देव सेव टेव गहै

सहै यमदं ध्रिग जीवन संसार है।। (पृ ४६७)

कई हिंदू यह कह कर सिखों को भ्रमित करते है कि गुरू गोबिद सिंघ जी ने नयना देवी के पहाड़ पर देवी प्रकट करके आराधना की थी। उन भूले हुए लोगों को यह नहीं पता कि इस देवी – पूजा के भ्रम जात व पाखंड का पर्दा – फाश करने के लिए ही गुरू जी ने यह कौतुक रचा था। जब सारी सामग्री एकत्र करने पर भी पंडित जी से देवी प्रकट न हो सकी तो पंडित डर के मारे भाग गया, तो गुरू गोबिंद सिंघ जी ने सारी हवन सामग्री अग्नि में डाल कर, श्री साहिब (कृपाण) हाथ में ले कर, एकत्र हुए लोगों को कहा, कि किसी वहम भ्रम में पड़ने की जरूरत नहीं है। देवी की कोई शक्ति नहीं। वास्तविक दवी तो यह तलवार ही है जो शक्ति की प्रतीक है।

इस उपरोक्त घटना के मूल पक्ष को छिपा कर, हिंदुओं द्वारा गुरू गोबिंद सिंघ जी की देवी – पूज्य दर्शाना, उन लोगों की मूर्खता व झूठ का प्रदर्शन ही कहा जा सकता है। गुरू साहिब जो अपनी बाणी अकाल – उस्तति में देवी को अकाल पुरख की दासी कह कर पुकारते है :

चरन सरन जिह बसत भवानी ।।

और गुरू अर्जुन साहिब का फुर्मान है कि जिस देवी को गुरू आंगद साहिब ने गुरू नानक के दरबार की झाड़ू – बरदार माना है, उस दासी की सेवा मूर्ख लोग ही कर सकते हैं :

ठाकुर छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख अंध अगिआना ।। (भैरउ महला ५, ११६८)

दबसितान मज़हब पुस्तक के रचनाकार, मोहसिन फानी ने एक आंखों देखे देवी – प्रसंग के बारे में लिखा है। इससे पता चलता है कि गुरसिखों के देवी के बारे में क्या विचार थे।

''गुरू हरगोबिंद साहिब जी करतपुर पहुंचे जो राजा तारा चंद की राजधानी थी। वहां के लोग मूर्ति पूज्य थे। पहाड़ के सिर पर एक नयना देवी का मंदिर था जिस की पूजा के लिए आस पास के लोग आया करते थे। एक भैरों नामी गुरू के सिख ने मंदिर में पहुंच कर नयनां देवी का नाक तोड़ दिया। इस बात की चर्चा सारी फैल गई, पहाड़ी राजाओं ने गुरू साहिब के पास पहुंच कर सिख की शिकायत की। गुरू साहिब ने भैरों सिख को राजाओं के सामने बुला कर पूजा तो उसने कहा, कि देवी से पूछना चाहिए कि उस की नाक किस ने तोड़ी है। इस पर राजाओं ने भैरों को कहा कि हे मूख! कभी देवी भी बातें कर सकती है?भैरों ने हंस कर उतर दिया कि यदि देवी बोल नहीं सकती और अपने अंगों को नहीं बचा नहीं सकती तो आप उस से नेकी की क्या उम्मीद रखते हो?इस बात को सुन कर राजा चुप हो गए ।''

इन उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह वास्तविकता प्रकट हो जाती है कि सिख धर्म ने देवी देवताओं को पूजा के लिए कोई स्थान नहीं हैं।

(5) मूर्ति पूजा

हिंदू मत में मूर्ति पूजा का विधान है। पर सिख धर्म ने मूर्ति पूजा को फोकट कर्म बताया है। इसके बारे में गुरबाणी का निर्णय है:

– हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ।।

नारदि कहिआ सि पूज करांही ।।

अंधे गुंगे अंध अंधारु ।।

पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ।।

ओइ जा आपि डुबे तुम कहां तरणहारु ।। (राग बिहागड़ा महता १)

– घर महि ठाकुरु नदरि न आवै ।।

गल महि पाहणु लै लटकावै ।।

भरमें भूला साकतु फिरता ।।

नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ।।

जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ।।

ओहु पाहणु ले उस कउ डुबता ।।

गुनहगार लूण हरामी ।।

पाहण नाव न पारगिरामी ।।

गुरु मिलि नानक ठाकुरु जाता ।।

जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता ।। (सूही महला ५, ७३८)

– जो पाथर कउ कहते देव ।। ता की बिरथा होवे सेव ।।?

जो पाथर की पाई पाइ ।। तिस की घाल अजांई जाइ ।।

ठाकुरु हमरा सद बोलंता ।। सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ।।

ना पाथरु बोले ना किछु देइ ।। फोकट करम निहफल है सेव ।। (भैरउ महला ५, ११६०)

– घरि नाराइणु सभा नालि ।। पूज करे रखै नावालि ।।

कुंगू चंनणु फुल चढ़ाए ।। पैरीं पै पै बहुतु मनाए ।।

माणूआं मंगि मंगि पैनै खाइ ।। अंधी कंमी अंध सजाए ।। (पृ १२४०)

– कहां भयो जो अति हित चित कर बहुबिधि सिला पुजाई?

प्रान थकयो पाहन कह परसत कछु कर सिद्धि न आई ।।

अच्छत धूप दीप अर्पत है पाहन कछू न खैहै ।।

तां मै कहां सिद्धि है, रे जढ़ ! तोहि कछू बर दैहै ।।

जौ जीअ होत तो देत कछू तुहि कर मन बच करम बिचार ।।

केवल एक सरण सुआमी बिन यौं नहि कतहि उधार ।। (देवगंधारी पा: १०)

– काहे को पूजत पाहन को? कछु पाहन मैं परमेसुर नाहीं ।।

तांही को पूज प्रभू करकै जिंह पूजत ही अघ ओघ मिटाहीं।।

आधि बिआधि के बंधन जेतक नाम के लेत सभै छुट जाहीं ।।

तांही को ध्यान प्रमान सदा यहि फोकट धर्म करे फल नाहीं ।। (३३ सवैये, पातशाही १०)

कई हिंदु सिखों के बारे में यह कहते हुए सुने गए है कि क्या गुरू ग्रंथ साहिब की पूजा मूर्ति पूजा नहीं?जैसे मूर्ति को भोग लगवाया जाता है, इसी प्रकार सिख कटोरे में कढ़ाह प्रशाद रख कर गुरू ग्रंथ साहिब को भोग लगवाते है।

ऐसे पराधर्मियों को पता नहीं, कि सिख कागज, स्याही, रुमाले व पालकी की पूजा नहीं करते बल्कि शबद की पूजा करते हैं। गुरू ग्रंथ साहिब शबद रूपी ज्योति गुरू है, जिस को खान–पान करवाने के लिए किसी पदार्थ की जरूरत नहीं होती। गुरू ग्रंथ साहिब के नीचे कटोरे में डाल कर जो कढ़ाह–प्रशाद रखा जाता है, वह गुरू ग्रंथ साहिब की हजूरी बैठे ग्रंथी सिख के लिए होता है ताकि वह सेवा –निवृत्त हो कर उसका सेवन कर सके। गुरू ग्रंथ साहिब के सम्मुख जो अरदास की जाती है, उस में भी यह शबद प्रयोग किये जाते हैं कि आप जी के दर पर कढ़ाह प्रशाद प्रवान होवे, यह नहीं कहा जाता कि आप को भोग लगे ।

(6) संध्या तर्पण

हिंदू मत में गायत्री1 आदि देवताओं की महिमा ओर स्तुति के मंत्र पढ़ कर और अंगन्यास2 करके संध्या की जाती है, और तर्पण करके देवता, पित्तर आदि को पानी दिया जाता है। पर सिख धर्म में ऐसी संध्या वर्जित है। केवल वाहिगुरू की आराधना और गुरबाणी द्वारा उस सर्वशक्तिमान का सुमिरन करने का ही विधान है।?

– एहा संधिआ परवाणु है, जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ।।

हरि सिउ प्रीति उपजै, माइआ मोहु जलावै ।।

गुर परसादी दुबिधा मरै, मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ।।

नानक संधिआ करै मनमुखी

जीउ न टिकै, मरि जंमे होइ खुआरु ।। (वार बिहागड़ा महला ३, पृ ६०३)

– संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझै दुखु पाइआ ।। (सोरठि महला ३, पृ ६०३)

गुरसिखों के लिए जो नित्य कर्म है, उसका वर्णन भाई गुरदास जी करते हैं :

– अमृत वेले नाःवणा, गुरमुख 'जप' गुरु मंत्र जपाया ।।

रात आरती सोहिला, माया विच उदास रहाया ।।

भाई दया सिंघ जी अपने रहितनामें में लिखते है :

गुरू का सिख तर्पण गायत्री की ओर चित देवे नाहीं ।।।

(7) सूतक – पातक

हिंदू मत के अनुसार सूतक का मंतव्य है प्रसूति के समय की अपवित्रता या अशुद्धि । इसी प्रकार मृत्यु के समय की अशुद्धि का नाम पातक है : जन्म के समय की अशुद्धि ब्राहमण के 11 दिन, क्षत्रीय के 13, वैश्य के 17 और शूद्र के 30 दिन रहती है। सूतक को दूर करने का उपाय हिंदू मत में इस प्रकार है :

काली गाय का मूत्र एक हिस्सा, सफेद गाय का गोबर दो हिस्से, कपिला गाय का घी चार हिस्से, तांबे रंगी गाय का दूध आठ हिस्से, लाग गाय का दहीं आठ हिस्से। इन पांचों वस्तुओं को कुशा के पानी से मिला कर पंच-गव्य बनता है। यह उपाय प्रसूति स्त्रियों को पिलाया जाता है। इसी प्रकार किसी प्राणी के मरने पर, ब्राहमण के 10 दिन, क्षत्रीय के 12 दिन, वैशय के 15 दिन और शूद्र के 30 दिन पातक रहता है। हिंदू मत के अनुयाई सूतक-पातक के इतने बड़े विश्वासी हैं कि प्रदेश में भी उन सूतक जा चिपटता है। पर सतगुरू जी ने इस भ्रमरूपी भूत से सिखों को बचा लिया है। सिख धर्म के अनुसार :

1 तत सवितु वरेणयं भगो देवस्य धी महि, धियो यो प्रचोदयात ।। हिंदुओं के धर्म का मूल आधार यह गायत्री मंत्र है। इस मंत्र के आदि में हिंदू रिषियों ने ऊ भः भवः स्वः" इतना अतिरिक्त पाठ और जोड़ दिया है।

इस सारे का अर्थ यह है :

जो सूर्य देवता सब की जिलाता है, दुखों में छुटकारा दिलवाता है, प्रकाश रूप है, विनती करने योग्य है, पाप नाशक है, जो हमारी बुद्धि को प्रेरित करता है, उस का हम ध्यान धरते है।।"

2 हृदय, सिर, बाहों, नेत्र आदि अंगों को हाथ लगा कर मंत्र पढ़ना, चुटकियां और तालियां बजाना ।

-जेकरि सूतकु मंनीऐ सभ ते सूतकु होइ ।।
गोहे अते लकड़ी अंदरिं कीड़ा होइ ।।
जेते दाणे अंन्ह के जीआ बाझु न कोइ ।।
पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ।।

सुतकु किउ करि रखीअे सूतकु पवै रसोइ ।।
नानक, सूतकु एवं न उतरे गिआनु उतारे धोइ ।। १ ।।

मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतक कुडु ।।
अखीं सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ।।
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ।।
नानक हंसा आदमी बधे जमपुरि जाहि ।।२।।

सभी सूतक भरमु है दूजे लगै जाइ ।।
जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ।।
खाणा पीणा पवित्र है दितोनु रिजकु सबाहि ।।
नानक, जिनी गुरमुखि बुझिआ, तिना सूतकु नाहि ।। (वार आसा महला १, पृ ४७२)

-जलि है सूतकु थलि है सूतकि, सूतकि ओपति होई ।।
जनमे सूतकु मूएं फुनि सूतकु, सूतकि परज बिगोई ।।
कहु रे पंडीआ कउन पवीता ।।
ऐसा गिआनु जपहु, मेरे मीता ।।१।। रहाउ ।।

नैनहु सूतकु बेनहु सूतकु, सूतकु स्रवनी होई ।।

ऊठत बैठत सूतकु लागै, सूतकु परै रसोई ।।२।।

फासन की बिधि सभु कोऊ जानै, छूटन की इकु कोई ।।

कहि कबीर राम रिदै बिचारै, सूतकु तिनै न होई ।। (गउड़ी कबीर जी, पृ ३३१)

(8) चौंका –कार

हिंदू मत ने चौके की शुचि व कार (लकीर) आदि की बहुत पाबंदी मानी जाती हैं। हिंदू मत की पुस्तकों में इस अनावश्यक शुचि व भिट तथा कार यानी लकीरें निकालने के बारे में इस तरह वर्णन आता है :

देवता चौके और कार के ही आश्रय जिंदा हैं। यदि गोबर का चौका डाल कर, कार न निकाली जाय तो राक्षस अन्न का रस ले जाते हैं। (लघु अत्रि संहिता अः ५)

आयु बढ़ानी हो तो पूर्व की ओर मुंह करके, यश के लिए दक्षिण की ओर, धन की प्राप्ति के लिए पश्चिम, और सत्य की प्राप्ति के लिए उत्तर की ओर मुंह कर के भोजन करना चाहिए :

जो कपड़े से सिर ढक कर, दक्षिण की दिशा में मुंह करके और जूती पहन कर रोटी खाता है, उसके भोजन को राक्षस खा जाते है। (मनु अः 2, स 52)

भोजन करते समय पैर गीले होने चाहिए, कपड़े से पोंछ कर सुखा लेना महा पाप है। (लघु अत्रि सहिता अः 5)

बाएं हाथ से खाना, शराब पीने के समान है। (बृद्ध अत्रि सहिता)

यदि लोहे के बर्तन में अन्न दिया जाए, तो अन्न विष्टा समान होता है और खाने वाला नर्क को जाता है। (अंत्रि संहिता)

यदि ब्राहमण पेड़ पर चढ़ा हुआ फल खाता हो और पेड़ की जड़ को चांडाल छू दे, तो ब्रहामण को शुद्धि के लिए प्रायश्चित करना चाहिए। (लघु अंत्रि सहिता अः 5)

लहसुन, गाजर, गन्ना खुम्भी और रोह (खाद) डाल कर पैदा किया गया सागन खाये। न देवता को चढ़ाए बिना माह की दाल खाए, यदि मास खाना हो तो पाठीन और रेहु मछली का खाये और किसी मछली का न खाये सेह, गोह, कछुआ, सहा और ऊंठ, बिना शंका खाये। (मनु अः 5, सः 5 से 41)

सिख धर्म में भोजन की स्वच्छता व पवित्रता रखने का पूरा विधान है, पर सुच भिट व कार निकालना, रेखाएं खीचने के अनावश्यक वहम भ्रम वर्जित किये गए है। इस बारे में गुरबाणी के प्रमाणी इस प्रकार है :

–दे कै चउका कढी कार ।। उपरि आइ बैठे कूड़िआर ।।

मतु भिटै, वे मतु भिटै ।। इहु अंनु असाडा फिटै ।।

तनि फिटै, फेड़ करेनि ।। मनि जूठै चुली भरेनि ।।

कहु नानक सचु घिआईऐ ।। सुचि होवै ता, सचु पाईऐ ।। (वार आसा महला १, पृ ४७२)

–झूठे चउके नानका सचा एको सोइ ।। (मारू महला ५, पृ १०१०)

–कुबुधि डूमणी, कुदइआ कसाइणि ।।

पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि

कारी कढी किआ धीऐ जां चारे बैठिआं नालि ।।

सचु संजमु करणी कारां, नावणु नाउ जपेही ।।

नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ।। (वार श्री राम महला ३, पृ९१)

– कहु, पंडित! सूचा कवनु ठाउ ।।

जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ।।.....

गोबरु जूठा, चउका जूठा, जूठी दीनी कारा ।।

कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ।। (बसंत कबीर, ११९५)

– खाणा पीणा पवित्र है दितोनु रिजकु संबाहि ।। (आसा का वार)

(९) बत व रोज़े

हिंदू मत के अनुसार एकादशी, जन्म अष्टमी आदि अनेकों व्रत रखने का विधान है। मुसलमान रोज़े रखते हैं। पर सिख धर्म में इन कर्मों को वर्जित किया गया है :

– अन्न न खाहि देहि दुखु दीजै ।।

बिन गुर गिआन त्रिपति नही थीजै ।। (रामकली महला ५, ९०५)

– मन संतोख सरब जीअ दइआ ।। इस बिध बरत संपूरन भइआ ।। (गउड़ी थिती महला ५, पृ २९९)

– बरत न रहउ, न मह रमदाना ।। तिस सेवी जो रखै निदाना ।। (भैरउ महला ५, पृ १३३६)

– नउमी नेमु सचु जे करै ।। काम क्रोधु त्रिसना उचरै ।।

दसभी दस दुआर जे ठाकै।। ऐकादसी ऐकु करि जाणै ।।

दुआदसी पंच वसगति करि राखै, तउ नानक मनु मानै ।।

ऐसा वरतु रहीजै, पाडे, होर बहुतु सिख, किआ दीजै ।। (वार सारंग महला ३, १२४५)

– छोडहि अंनु करहि पाखंड ।। ना सोहागनि ना आहि रंड ।।

जग महि थकते दूधाधारी। गुपती खावहि वटिका सारी ।।

अंनै बिना न हाइ सुकालु ।। तजिअै अनि न मिलै गुपालु ।। (गौंड कबीर, ८७३)

– गुरू का सिख एकादशी आदि बरत न रखे ।। (रहितनामा भाई दया सिंघ जी)

सिख इह रखें – अखीयां कर पर स्त्री ना देखे, जिव्हा कर मिथ्या न बोले, पैरां कर बुरे कर्म नूं न धाए ।

(10) मुहूर्त, थित वार

हिंदू मतानुसार मुहूर्त, थित, वार, शगुन, अपसगुन आदि को बड़ी महानता दी जाती है। इन का कई प्रकार का अच्छा बुरा फल माना जाता है। पर सिख धर्म में इन भ्रमों का पूर्ण त्याग किया गया है यथा :

– सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीअै हरि नाउ ।। (सिरी राग महला ५, पृ ४८)

– सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ।। (आसा महला ५, ४०१)

– प्रभू हमारे सासत सउण ।। सूख सहिज आनंद ग्रिह भउण ।। (भैरउ महला ५)

– सतगुर बाझहु अंधु गुबारु ।। थिती वार सेवहि मुगध गवार ।। (बिलावल महला ३, पृ ८४३)

– सउण सगन वीचारणे, नउ ग्रहि बारहि रासि विचारा ।।

कामण टूणे अउंसीआं, कणसोई पसार पासारा ।।

गद्दों कुत्ते बिल्लीआं, इल्ल मलाली गिद्दड़ छारा ।।

नारि पुरख पाणी अगनि, छिक्क पद्द हिडकी वरतारा ।।

थित वार भद्रा भरम, दिसासूल सहिसा संसारा ।।

वल छल कर विश्वास लख, बहु चुखी किउं रवै भतारा ।।

गुरसुख सुख फल पार उतारा ।। (भाई गुरदास, वार ५)

– सज्जा खब्बा सउण, न मन वसाइआ ।।

नारि पुरख नो देख, न पैर हटाइआ ।।

भाख सुभाख विचार, न छिक मनाइआ ।।

देवी देव न सेव, न पूज कराइआ ।।

भंभलभूसे खाइ, न मन भरमाइआ ।।

गुरसिख सचा खेत, बीज फलाइआ ।। (भाई गुरदास, वार २०)

– पूछत न जोतक औ बेद तिथि वार कछु

ग्रहि और नछत्र की न शंका उर धारी है। (भाई गुरदास)

– सिखि अनन्य पंडित! दिख ऐसे ।।

ग्रहि तिथि वार न मानहि कैसे ।।

एक भरोसा प्रभु का पाए ।। त्याग लगन अरदास कराए ।। (गुर बिलास)

(11) प्रेत, क्रिया, श्राद्ध, तीर्थ

हिंदू मत में प्रेत किया द्वारा गया आदि तीर्थो पर पिंड भरवाने से जीव की गति होना माना जाता है। पित्तरों को तृप्त करने के लिए श्राध करवाने का विधान है। इस संबंध में हिंदू मत की पुस्तकों में यह संदर्भ मिलते है।

श्राद्ध के दिनों में पित्तरपुरी खाली हो जाती है। सारे पित्तर श्राद्ध का अन्न खाने के लिए मात लोक में भाग कर आ जाते हैं। यदि उनको खिलाया न जाए तो श्राप दे कर चले जाते हैं। श्राद्ध करवाने जैसा और कोई पुण्य नहीं, सुमेर पर्वत जितने भारी पापों का, निश्चित किये हुए श्राद्ध करने से तुरंत नाश हो जाता है। श्राद्ध कर के ही आदमी स्वर्ग को प्राप्त होता है। (अत्रि संहिता)

श्राद्ध में यदि पित्तरों के लिए तिल–चावल, जौं, मांह और साग तरकारी दी जाए तो पित्तर एक महीना भरपेट रहते हैं, मच्छी के मास से दो महीने, हिरन के मास से तीन महीने, साढे के मास से चार महीने, पक्षियों के मास से पांच महीने, बकरे के मास से छः महीने, चीतल के मास से सात महीने, चिंकारे के मास से आठ महीने, लाल मुर्ग के मास से नौ महीने, झोटे और सूअर के मास से दस महीने, कछुए और सहे का मास देने से पित्तर ग्यारह महीने भरपेट रहते है।

जिस ब्राहमण के वैशणव मत का तिलक न हो, यदि उस को श्राद्ध में भोजन दिया जाय तो श्राद्ध करवाने वाले के पित्तर नि:संदेह विष्टा और मूत्र खाते - पीते हैं। (वृहित हारीत संहिता अ: २)

गुरमत में उपरोक्त अंकित भ्रमों के विरूद्ध गुरू साहिब ने यह उपदेश दिया है :

- दीवा मेरा एकु नामु, दुखु, विचि पाइआ तेतु ।।
उनि चानणि ओहु सोखिआ, चूका जम सिउ मेलु ।।१।।
लोका! मत को फकड़ि पाइ ।।
लख मढिआ करि ऐकठे, एक रती ले भाहि ।।१।।रहाउ।।
पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचुनामु करतार ।।
ऐथै ओथै आगे पीछै एहु मेरा आधार ।।२।।
गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतमराउ ।।
सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ।।३।।
इक लोकी होरु छमिछरी, ब्राहमणु वटि पिंड खाइ ।।
नानक पिंडु बखसीस का, कबहूं निखूटसि नाहि ।। (आसा महला १, पृ ३५८)
- नानक, अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ।। (वार माझ महला १)
- जीवत पितर ना मानै कोऊ मूएं सिराध कराहीं।।
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ।।.....
माटी के कर देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ।।
ऐसे पितर तुमारे कहीअहि, आपन कहिआन लेही ।। (गउड़ी कबीर ३३२)

सिख धर्म में तीर्थो पर जा स्नान करने की कोई महानता नहीं दर्शाइ गई। सिख धर्म के अनुसार :

- तीरथ पूरा सतिगुरू जो अनदिनि हरि हरि नाम धिआए ।। (वार माझ महला ४)
- तीरथ नावन जाउ तीरथ नाम है ।।
तीरथ सबद बीचार अंतर गिआन है ।। (धनासरी महला १)
- तीरथ नाइ न उतरसि मैल ।।
करम धरम सभ हउमै फैल ।। (रामकली महला ५)
- मनि मैलै सभु किछु मेला, तनि धोतै मनु हछा न होइ ।।
इहु जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ।। (वडहंस महला ३, पृ ५५८)
- जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ।।
जैसे मेंडुक तैसे ओइ र फिरि फिरि जोनी आवहि ।। (आसा कबीर, पृ ४८४)

गुरू अमरदास जी ने ज्योति में विलीन होते समय अपने परिवार व सारी संगत को एकत्र करके जो उपदेश दिया, वह सद बाणी के नाम पर गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज है। इस बाणी में से हिंदू सज्जन कई पंक्तियों के अर्थों को न समझते हुए सिखों को भ्रमित करते हुए कहते हैं कि गुरू अमरदास जी ने ब्राहमणी संस्कार करने करवाने की शिक्षा दी है। ऐसे भ्रमों से सिखों को बचना चाहिए ।

सद बाणी के अर्थों को अच्छी तरह समझने के लिए, सिख मिशनरी कालेज द्वारा प्रकाशित सद स्टीक मंगवा कर पढ़नी चाहिए । नीचे हम कुछेक पंक्तियों के सही अर्थ अंकित कर रहे हैं, जिनका आश्रय लेकर वे हमें अवसर दिग्भ्रमित करने की कुचालें चलते रहते हैं।

केसी गोपाल पंडित सदिअहु,

हरि हरि कथा पढ़हि, पुराणु जीउ ।।

इस पंक्ति में केसो पर अकालपुरख का द्योतक है जो गुरबाणी में कई स्थानों पर प्रयोग किया गया है। गोपाल का अर्थ है सृष्टि का पालक, भाव अकाल पुरख । पंडित शब्द बहुवचन है जिसका अर्थ हैं गुरसिख । ''केसो गोपाल पंडित सदिअहु का अर्थ है, सृष्टि का पालन करने वाले अकालपुरख के सिखों को निमंत्रित करना। वह आ कर क्या करें, हरि हरि कथा पढ़हि, पुराणु जीओ" वे हरी की कथा रूपी पुराण पढ़ें, भाव वाहिगुरू का स्तुति – गायन रूपी कीर्तन करें । इसी प्रकार :

पिंड पतल क्रिआ दीवा फुल, हरिसर पावए ।।

इस पंक्ति का अर्थ है कि गुरू अमरदास जी कहते है कि मै ब्राहमणी मत के गांव, पतलें, क्रिया, दीवा, फूल आदि सारे कर्मकांड हरि सर भाव साध संगत से न्योछावर करता हूं । भाव मुझे साध संगत की जरूरत है जो हरी का स्तुति गायन करे, इन ब्राहमणी कर्म कांडों की जरूरत नहीं ।

गुरू अमरदास जी की बाणी में एक और शबद नीचे दिया जाता है जिसमें उनके द्वारा दर्शाए सिखी सिद्धांत स्पष्ट हो जाते हैं :

हरि की तुम सेवा करहु, दूजी सेवा करहु न कोइ जी ।।

हरि की सेवा ते मनहु, चिंदिआ फलु पाईऐ

दूजी सेवा जनम बिरथा जाइ जी ।।१।।

हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी, हरि मेरी कथा कहानी जी ।।

गुरप्रसादि मेरा मनु भीजै ऐहा सेव बनी जीउ ।।१।। रहाउ।।

हरि मेरा सिम्रित, हरि मेरा सासत्र, हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ।।

हरि की मै भूख लागे, हरिनामि मेरा मनु त्रिपतै

हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ।।२।।

हरि बिनु होरि रासि कूड़ी है, चलदिआ नालि न जाई ।।

हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै, जहा हउ जाउ तह जाई ।।३।।

सो झूठा जो झूठे लागे झूठे करम कमाई ।।

कहै नानक हरि का भाणा होआ कहणा कछू ना जाई ।।४।।२।।४।। (गूजरी महला ३, पृ ४९०)

(12) मंत्र, यंत्र, ग्रहि

हिंदू मत में मंत्र, यंत्र, ग्रह पूजा आदि कर्मो से अनेक प्रकार की कार्य सिद्धि होने की मान्यता है।

यथा:

मंत्र के बल से ऋण सिद्धि मिल सकती है। शत्रुओं का नाश हो जाता है। देवता वश में होते हैं। मंत्र, जंत्र, तंत्र द्वारा मनवांछित फल मिल सकते हैं। (देखें, मंत महोदय और महां निर्बाण तंत्र)

जो ग्रहों की पूजा करता है उस को कोई रोग नहीं होता! धन बहुत मिलता है। सौ स्त्रियां भोगने वाला होता है और आयु लंबी होती हो जाती है। (देखें वृहत पराशर संहिता, अ ९)

गुरमत में इस पाखंड जाल को निष्फल कहा गया है।

यथा:

– तंत मंत पाखंड न जाणा, राम रिदे मन मानिआ ।। (सूही महला १)

– देवी देव न सेवका तंत न मंत न फुरण विचारे ।।

गुरमुख पंथ सुहावड़ा धंन गुरू धंन गुरू पिआरे ।। (वार ४०)

– तंत्र मंत्र पाखंड कर कलहि क्रोध बहु वाद वधावै।

फोकट धरमी भरम भुलावै ।। (भाई गुरदास वार १)

तंत मंत रसायणा, करामात कालख लपटाए ।।

कलिजुग अंदर भरम भुलाए ।। (भाई गुरदास वार १)

– धत्रृग जिहवा गुरु सबद बिन होर मंत्र सिमरणी ।। (वार २७)

तंत मंत पाखंड लख बाजीगर बाजारी नंगै?

गुर सिख दूजे भावहूं संगै ।। (भाई गुरदास वार २८)

– सतिगुर सबद सुरति लिव मूल मंत्र

आन तंत्र मंत्र की न सिखन प्रतीत है।। (कबित भाई गुरदास)

दबिस्तान मुज़ाहिब में लिखा है:

सिख हिंदुओं के मंत्र नहीं पढ़ते और संस्कृत जुबान से जिस को ब्राहमण देवताओं की भाषा कहते हैं, कुछ सरोकार नहीं रखते।"

ग्रहों और नक्षत्रों के विषय पर सिख धर्म की राय :

– सुख सहज आनद घणा हरि कीरतनु गाउ ।।

गरह निवारे सतिगुरू, दे अपणा नाउ ।। (आसा महला ५, ४००)

पाखंडी लोग नक्षत्र और ग्रहों की कुंडलियां बनाते हैं और दिनों के भले बुरे फल मान कर, समझते हैं कि सुख – दुख इनसे प्रभावित होते हैं। शुभ और अशुभ ग्रहों के वे फल लिखते हैं और अगले पिछले समय की दशा का वर्णन करते हैं।

भाई गुरदास जी इसी प्रसंग पर कहते हैं :

– गुर सिख संगत मिलाप को प्रताप ऐसो

परिब्रत एक टेक सुविधा निवारी है,

पूछत न जोतक और वेद तिथि वार कछु

ग्रह और नछत्र की न ऋका उर धारी है ।।

सिख धर्म में मंत्रों का महामंत्र गुरमत नाम है :

महां मंत्र नानक कथै हरि के गुण गाई ।।

ना जंत्र में न तंत्र में न मंत्र वसि अवाई ।। (अकाल उस्तति पा: १०)

(13) यज्ञ होम

हिंदू मत में यज्ञ और होम की अपार महिमा गाई गई है। होम – यज्ञ द्वारा कार्यों की सिद्धि का होना माना गया है।

यथा:

यज्ञ सभी फलों को प्रदान करने वाला है। यज्ञ के कारण ही देवता लोग जीते हैं जो पशु यज्ञ में मारा जाता है वह मारने वाले सहित स्वर्ग को प्राप्त होता है। (विष्णु समृति अंस ५१)

ब्रहमा जी ने पशु यज्ञ के लिए ही बनाए हैं। यज्ञ में पशु मारने से सारे संसार का भला होता है। इसलिए हिंसा का कोई दोष नहीं। यज्ञ के लिए धान, जौं, वृक्ष, पशु – पक्षी और कछुए आदि का जो नाश होता है, वे सब उत्तम योनियों को प्राप्त होते हैं। जो यज्ञ और श्राद्ध में बलिदान किये हुए मास को नहीं खाता, वह मर कर 21 जन्मों तक सूअर बनता है।

(मनु अ: ५, श: ३५, ३९, ४०)

हिंदू मत के यज्ञ, परोपकार की दृष्टि में रख कर नहीं हुआ करते थे, बल्कि उनमें बहुत स्वार्थपरता थी,

यथा:

ब्राहमण को जिस यज्ञ में थोड़ी दक्षिणा मिले, वह न करे । (मनु अ: ११, श: ३९)

थोड़ी दक्षिणा वाले यज्ञ नेत आदि इंद्रियों यश, स्वर्ग, आयु, मृतक की कीर्ति, औलाद और पशु आदि को नाश कर देते हैं, इसलिए थोड़ी दक्षिणा वाला यज्ञ न करे। (मनु अ १७ ण। ४०)

अग्नि में जो आहूति डाली जाती है वह सूर्य को पहुंचती है और उस आहूति का रस, सूर्य में से वर्षा हो कर टपकता है जिस से अन्न पैदा होता है और प्रजा बढ़ती है। (मनु अ: ३, श: ७६)

यज्ञ और होम के विषय में सिख धर्म में सतगुरू जी की आज्ञा इस प्रकार है

होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार ।।

नरकु सरगु दुइ भुंचना होइ बहुरि बहुरि अवतार ।। .....

जैसा गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ।।

नानकु कहै सुनि रे मना । करि कीरतनु होइ उधारु ।। (गउड़ी महला ५, पृ २१४)

– होम जग जप तप सभि संजम तटि तीरथि नहीं पाइआ ।।

मिटिआ आपु पए सरणाई, गुरमुखि नानक जगत तराइआ ।। (भैरउ महला ५, ११३१)

– होम जग सभि तीरथां पढ़ि पंडित थके पुराण ।।

बिखु माइआ मोहु न मिटई, विचि हउमै आवणु जाणु ।।

सतगुर मिलीऐ मलु उतरी हरि जपिआ परखु सुजाणु ।।

जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ।। (सलोक वारां तों वधीक १४१७)

– लख जत तप लख संजमा होम जग लख वरत खरदे ।।

गुरसिखी खल तिल न लहदे ।। (भाई गुरदास जी)

(14) संस्कार और चिन्ह

हिंदू मत के संस्कार और सिख धर्म के संस्कारों में जमीन आसमान का अंतर है। इसी प्रकार सिख धर्म के चिन्ह, हिंदू मत के चिन्हों से बिल्कुल भिन्न व न्यारे हैं। सिख धर्म के संस्कार इस प्रकार है :

(1) जन्म संस्कार (2) अमृत संस्कार

(3) अनंद संस्कार (4) मृतक संस्कार

वे सारे संस्कार गुरू जी द्वारा दर्शाई गई मर्यादा के अनुसार किये जाते हैं। इन संस्कारों को पूरा करने के लिए सिख धर्म किसी ब्राहमण पर आश्रित नहीं। न ही इन संस्कारों की मर्यादा में हिंदू मत का दखल ही है। यह संस्कार सिखों के न्यारे होने का प्रत्यक्ष व अकाट्य प्रमाण है। इन संस्कारों को व्याख्या सिख रहित मर्यादा नामक पुस्तक, जो पंथ द्वारा प्रमाणित है और शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री अमृतसर द्वारा प्रकाशित की गई है, में अच्छी तरह की गई है।

इसी प्रकार सिखों के धार्मिक चिन्ह सिखी के पांच ककार है – केश, कंघा, कड़ा, कछैहरा व कृपाण ।

हिंदू धोती पहनते है, टिक्का व तिलक लगाते है, बोदी रखते हैं, पर सिक्खी सिद्धांत ऐसा करने की आज्ञा नहीं देते। सिखों का न्याया स्वरूप, सिख की विलक्षणता व न्यारेपाने को प्रकट करता है। सिख पंथ गुरू नानक साहिब के समय से ही केशाधारी चला आ रहा है। जो पराधर्मी यह कहते है कि केश रखने का आदेश कलगीधर पातशाह, गुरू गोबिंद सिंघ जी ने दिया था, वे सिख धर्म के इतिहास व गुरबाणी के उन उपदेशों का ज्ञान नहीं रखते जिन में केशों धारण करने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। सिखों के न्यारे स्वरूप से पतित करने के लिए ही ऐसे भ्रम डाले जाते हैं। सिखों को इनसे सावधान होने की जरूरत है।

(15) जनेऊ संस्कार

हिन्दू मत में, हिंदू धर्म को ग्रहण करने के लिए जनेऊ संस्कार किया जाता है। पर सिख धर्म में, सिखी धारण करने के लिए अमृत संस्कार का प्रावधान है। गुरू नानक साहिब ने 9 साल की आयु में जनेऊ पहनने से इनकार कर के सब को यह बता दिया था कि मैं हिंदू नहीं, मेरा धर्म कुछ और है। कई हिंदू कहते है कि गुरू तेग बहादुर साहिब ने जनेऊ की रक्षा के लिए शीश बलिदान कर दिया अर्थात वे जनेऊ के पक्ष में थे। उनको इस वास्तविकता का पता नहीं कि गुरू तेग बहादुर जी ने धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार को बरकरार रखने के लिए कि कोई जबर्दस्ती किसी का धर्म परिवर्तन नहीं करवा सकता, को दृष्टि में रख कर, अपना बलिदान दिया था। यदि उस समय हिंदू, मुसलमानों का जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन करते होते, यदि मुसलमान गुरू जी के पास फरियादी होते, ऐसी स्थिति में गुरू जी ने मुसलमानों का धर्म बचाने की खातिर भी शहीदी दे दी होती ।

सिख धर्म में पहले नौ गुरू साहिबान के समय 'चरणामृत' भाव चरण पाहुल दे कर सिख बनाया जाता था। दीक्षा दी जाती थी। इस तरह करना हिंदू मत की वर्णभेद की रीति पर चोट थी, क्योंकि सभी वर्णों के लोग एकत्र होकर चरणामृत पीते थे।

सिख धर्म किसी जात पात को नहीं मानता और न ही सतगुरू की किसी जाति को महत्त्व देने वाले थे। पर हिंदु मत के विचार के अनुसार गुरू साहिब क्षत्रीय थे। अत: क्षत्रीय का चरणामृत, हिंदू मत के शास्त्रों के अनुसार ब्राहमण कभी भी नहीं पी सकता था। अत: चरणामृत की रीति चलाने का मकसद ही यही था कि जाति अभिमान की जड़ काट दी जाए। फिर दसवें गुरू जी ने इस रीति को खण्डे के अमृत में परिवर्तित कर दिया और अमृत पान करवाने के समय गुरू जी ने उपदेश दिया :

आज से तुम्हारा जन्म सतगुरू के घर हुआ है। पिछली जात – पात, वर्ण, गौत्र और मज़हब आदि सभी मिट गए हैं। इसलिए अपना पिता गुरु गोबिंद सिंघ, माता साहिब कौर, जन्म पटने का और वासी अनंदपुर की जानिए।''

इस उपदेश से ही सिख कौम के न्यारे और एक भिन्न कौम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है।

(16) माला – तस्बियों के चक्कर

माला के मनकों की गिनती, धातुओं, लकडियों, कांच इत्यादि के काफी भ्रम व्याप्त हैं। मुसलमान उसे तस्बी और हिंदू माला कह देते हैं। सिख धर्म ने इन वहमों को नहीं माना है। सिख धर्म के अनुसार परमात्मा के नाम का जाप करना ही असली माला का जाप करना है :

– हिरदै अपनी जपउ गुणतास ।।

– हरि हरि अखर दोइ इह माला ।।

– सुक्रित करणी सार जप माली ।।

भाई गुरदास जी ने लिखा है :

माला तसबी तोड़ के जिउं सिउं तिवें अठोतर लाइआ ।।

मेर इमाम रलाइकै राम रहीम न नाउं गणाइआ ।।

(17) स्वर्ग – नर्क का चक्कर

मुसलमान इसे दोज़ख और बहिश्त कहते हैं। हिंदू नर्क और स्वर्ग कहते हैं और इन में आवागवन मानते हैं। पर सिख धर्म का नर्क स्वर्ग से कोई वास्ता नहीं। सिखी का तो सिद्धांत है :

– धन नहीं बाछहि, सुरग ना आछहि ।।

– कवणु नरक किआ सुरग बेचारा संतन दोऊ रादे ।।

हम काहू की काण न कढते आपणे गुरप्रसादे ।।

सिखों के लिए साध संगत, जहां हरि का यश गायन होता हे, वही बैकुंठधाम है।

– तहां बैकुंठ जह कीरतन तेरा तूं आपे सरधा लावहि ।।

(18) गुर्दे दबाने और जलाने का वहम

हिंदू लोग मासूम बालकों को धरती में मुसलमानों की भांति दबा देते हैं। बड़ों को जला देते हैं। मुसलमान मुर्दों को दाह करना अधर्म मानते हैं बल्कि दहन के कर्म को दोज़खों का भागी ठहराते है। इसाई, यहूदी भी मृतक को दबा देते हैं। गुरमत में दोनों के विचारों को वहम और हठधर्मी माना गया है। सिख धर्म में मृतक को दबाना, जलाना एक समान है, कोई भ्रम नहीं। पर साधारण जनमानस व वातावरण को ध्यान में रखते हुए मुर्दे को जला देने की क्रिया को ही उत्तम माना गया है। इसलिए दाह संस्कार करने की प्रथमिक्ता दी गई है। हां, दाह संस्कार करने का जहां साधन उपलब्ध न हो, वहां पर नदी में बहा देना या दबा देने के बारे में कोई भ्रम वहम नहीं करना, ऐसा बताया गया है। पांचवे गुरू जी की देह का सस्कार रावी नदी में बहा कर किया गया था। मृतकों को जलाने, दबा देने या पानी में बहा देने से मनुष्य की गति का होना या न होना मानना, अज्ञान का मार्ग है। बात एक ही है, जलाओ, दबाओ चाहे जल में विसृजित कर दो। गुरू अमरदास जी कहते हैं :

– इकि दझहि इकि दबीअहि इकना कुते खाहि ।।

इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसण पाइ ।।

नानक एव न जापई किथे जाइ समाइ ।। (वार सोरठि महता ३)

सिख धर्म में मृतक प्राणी, चाहे बड़ी आयु का हो चाहे छोटी आयु का, सब का दाह संस्कार ही किया जाता है। दाह संस्कार के समय आयु का कोई वहम – भ्रम नहीं किया जाता।

(19) ब्राहमण को दान – दक्षिणा

हिंदू मत की वर्णभेद की नीति के अनुसार हिंदुओं ने दान देना और दान लेना, ब्राहमण का कर्म निश्चित किया है। ब्राहमण से यह आशा कभी नहीं की जा सकती कि वह किसी को दान देगा । उसने अपना कर्म केवल दान लेने तक ही सीमित रखा हुआ है।

सतगुरू जी ने सिखों को ब्राहमण के चंगुल से बाहर निकाला है और उपदेश दिया है कि ब्रहामण की विशेष पूछताछ की कोई आवश्यकता नहीं है। दान देना और सेवा करना, खालसा जी के लिए नियत कर दिया है।

– सेव करी इन ही की मन भावत, और की सेवा सुहात ना जी को ।।

दान दयो इनही को भलो, अर आन को दान न लागत नीको ।।

आगै फलै इन ही को दयो जग मै जस और दयो सभ फीको ।।

मो ग्रहि में मन ते तन ते, सिर लौ धन है सभी ही इनही को ।।

– सतिगुरु प्रीति गुरसिख मुख पाइ ।। (महला ३)

– जो मन सिखन के मुख परे ।। सो मुझ को पहुचै हित धरै।। (सरज प्रकाश रास ५)

(20) सिख धर्म ओर तिलक आदि

सिख धर्म में तिलक लगाना सख्त मना है। हिंदू लोग माथे या शरीर के अंगों पर जाति सूचक निशान लगाते हैं जिस को तिलक कहा जाता है। यह केसर, राख, चंदन आदि का होता है। शैव त्रिपुंड आड़ा (टेढा) तिलक और वैश्नव खड़ा (उर्ध पुंड्र) । वैशनवों के बाहर तिलक हैं, जो शरीर के कई अंगों पर लगाते है।

गुरमत का सिद्धांत भाई गुरदास जी बताते हैं :

– बारह तिलक मिटाइकै, गुरमुख तिलक नीसार चढ़ाइआ ।।

(21) भाषा का झगड़ा

हिंदू अपनी भाषा या बोली को देव भाषा और दूसरों की भाषा को मलेच्छ भाषा आदि पुकार कर निंदा करते आए हैं। पर सिख धर्म का सिद्धांत है कि परमात्मा की अपनी कोई विशेष बोली नहीं है। इसलिए सिख धर्म में ऐसी ईर्ष्या द्वैत नहीं है। गुरबाणी में समस्त भाषाओं को सम्मान दिया गया है। सिखों के लिए सारी भाषाओं का ज्ञान अति आवश्यक है। पर विशेष कर के गुरमुखी सीखने का निर्देश है क्योंकि गुरबाणी का अधिकांश हिस्सा गुरमुखी लिपी में अंकित है। गुरू साहिब ने हिंदुओं की भांति अरबी फारसी को मलेच्छ भाषा का फतवा नहीं दिया बल्कि फारसी में भी बाणी की रचना करके उस भाषा का सम्मान बढ़ाया है। देखें यह शब्द :

यक अर्ज़ गुफतम पेश तो .....

(22) सिख कानून की आवश्यकता

जिस प्रकार हिंदुओं और मुसलमानों ने अपने अपने मतानुसार कानून बनवा कर, समय की सरकार से पास करवा कर, प्रचलित किये हैं इसी प्रकार सिखों को भी प्रयास करके अपने लिए अलग से सिख कानून बनवाना चाहिए । सिख एक अलग कौम है। इसलिए सिखों पर हिंदू कानून ठोसना सिखों के साथ भारी अन्याय व जबर्दस्ती करना है। जिस प्रकार आनंद मैरिज एक्ट, कृपाण एक्ट आदि बना है इसी प्रकार सिखों के लिए सिख कानून की स्थापना होनी अति आवश्यक है। हिंदू बहुमत की सरकार की ओर से सिखों पर हिंदू विरासत एक्ट ठोसना सिखों के साथ अन्याय करना है। कितनी आश्चर्य की बात है कि मुसलमानों व इसाइयों पर तो यह एक्ट लागू नहीं होता, पर सिखों को हिंदुओं की शाखा बता कर उन के साथ यह एक्ट टांग दिया है। सिख नेताओं, अखबारों व बुद्धिजीवियों को फौरी तौर पर इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

गुरबाणी, सिख इतिहास व सिख रहित मर्यादा के प्रमाणिक संदर्भो से कई ग्रंथ सिखों के न्यारे व भिन्न कौम होने के बारे में लिखे जा चुके हैं। भाई काहन सिंघ नाभा द्वारा हम हिंदू नहीं, ज्ञानी लाल सिंघ संगरूर द्वारा सिख हिंदू नहीं, हिंदू सिखां दा निबेड़ा, न्यारा खालसा आदि ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। जब गुरू नानक देव जी ने जनेऊ धारण करने से इनकार करके हिंदू धर्म से अपना पीछा छुड़वा लिया तो फिर सिखों का हिंदू कानून से कोई संबंध नही रह जाता। कई कह देते हैं कि सिख हिंदुओं में से निकले है। यदि एक मिनट के लिए यह बात मान भी ली जाय तो फिर सिखों को फिर हिंदुओं में मिलने की जरूरत ही क्या है, जब एक बार निकल ही गए तो ।

सर लैपल ग्रिफिन (Sir Lepel Griffin) इशारे से सिख लॉ बनाने के लिए प्रेरित करते हैं और यह भी कहते हैं कि सिखों पर हिंदू लॉ का प्रयोग करना अनुचित है :

The Sikh had abandoned the Hindu faith and with it the system of law which is the basis of that faith and which was inseparable from it. For a hundred and fifty years they had been governed as for as Chief ships were concerned, by another code altogether, and it was as reasonable for them to refer Manu and the shastras as the source of legal authority, as it would have been for Muhammadans, who had embraced Sikhism to appeal to the Shara

(The Rajas of the Punjab, p. 338)

इसका अर्थ यह है कि :

सिखों ने हिंदू धर्म छोड़ दिया है इसलिए हिंदुओं का कानून भी साथ ही छूट गया। सिखों के लिए हिंदू कानून का हवाला देना वैसा ही है जैसे कोई मुसलमान सिख बन कर शराह मुहम्मदी का हवाला दे ।"

कोई कौम भी उतना समय तक उन्नति नहीं कर सकती, जब तक वह दूसरे की गुलामी छोड़ कर स्वतंत्र न हो जाए। कोई माने चाहे न माने, पर यह बात सर्व विदित है कि हिंदू, बहुमत की सभ्यता, रस्मों-रिवाजों, त्योहारों व ब्राहमणी मत की फोकट कर्मकांडीय रीतियों का सिखों पर भरपूर असर पड़ा है। इस को, तो ही दूर किया जा सकता है यदि सिख एक स्वतंत्र कौम के तौर पर सोचना आरंभ करें ओर गुरमत के प्रचार को घर-घर पहुंचाने के लिए इस श्रृंखला की पुस्ताकों को हर घर में पहुंचाने का प्रयास करें। इन पुस्तकों को पढ़ कर ही हमें वास्तविक सिखी सिद्धांतों का पता चलेगा और समझ आ जाएगी कि हम क्या हैं और कौन हैं?

(23) सिख धर्म, विश्वव्यापी धर्म

दुनियां के सभी धर्मों का निष्पक्ष अध्ययनय करने वाले विद्वान एच. एल. बर्नाडशा ने लिखा है कि सिख धर्म एक विश्वव्यापी धर्म है जो सारे पुरातन मतों का स्थान लेते हुए सारे संसार को सुख व शांति की राह दर्शाने में कामयाब हो सकता है।

वेदों, कतेबों के मत और उनके नियम संसार में एक-समान नहीं निभ सकते। कहीं जाति पाति, रूप रंग, नस्ल भेद आदि का भेदभाव अवरोध डाल देगा। कहीं सूर्य, चंद्रमा, चित वार से संबंध रखने वालें कर्म कांड, व्रत, रोज़े, नमाज, संध्या आदि उन स्थानों पर नहीं माफिक आएंगी जहां छ: महीने के दिन व रात हैं।

वेदी कतेबी मतों का खुदा समुंद्रों, आसमानों, मसीतों, मंदिरों, दक्षिण पश्चिम आदि दिशाओं में निवास करता है, परंतु सिख धर्म में परमात्मा को हर स्थान पर हाज़र नाज़र व भरपूर माना गया है :

नानक का प्रभु पूरि रहिओ है, जत कत तत गोसाई ।।

अंत में भाई काहन सिंघ जी नाभा द्वारा रचित एक कबित लिख कर, खालसा पंथ के न्यारे होने व जीवन शैली के बारे में खालसा को अपने कर्तव्य दृढ़ करवाते हैं :

मानत है एक को अनादी और अनंद नित्य,

तिसही ते जानत है सर्ब पसारो है ।।

कृत की उपासना न करै करतार त्याग नाही

एक गुरू ग्रंथ कीओ आपनो अधारो है।

जात पात भेद भ्रम मन तैं मिटाय कर

सभ के सहोदर सो करत प्यारो है।

हितकारी जग को, पै जल माहि पंकज ज्यों

गुरदेव नानक की खालसा निआरो है।।

(24) हिंदू तुर्कन ते है न्यारा

सिखों के आक्रमणों से तंग आकर नादरि शाह ने लाहौर के गर्वनर ज़क़रिया खां ने पूछा कि ये लंबे केशों वाले कौन हैं?तो उत्तर में जकरिया खान ने इस प्रकार बताया :

हिंदू तुर्कन ते है न्यारा, फिर्का इन का अपर अपारा ।

परत्रिय समझत मात समानै, चोरी यारी निंद न ठाने ।

बयाह नकाह न एह करात, भुगत अनंद, अनंद पढ़ात ।

सिंघ सिंघनी जो मरजात, बांटत हलूआ तुरत बनात ।

किरिआ करम करावत नाहिं, हडी पाए न गंगा माहिं ।

दगा न काहूं संग कमैं हैं, मारत लूटत उजागर कैहैं ।

मात पिता भाई सुत तीआ, इन ते प्यारा सिंघ लखीआ ।।

आपन प्यार ज़रा न धारत, मन तन धन सिंघन है वारत ।

एक रब्ब की करत बंदगी, रखत न औरन की गुछंदगी ।

बेद पुरान कतेब कुरान, पढ़त सुनत, नहि मानत कान ।

गुरू नानक जो कथी कलाम, तां पर रखत इमान तमाम।

गांव किसी में सो न बसे हैं, रात किते दिन किते बितै हैं।

इक ही बर्तन में सभ कांहूं, आबहयात पिलावत ताहूं ।

जाति गोत कुल किरिआ नाम, पिछले सो तज देव तमाम ।

जब को मजहब इन्हों का लैहैं, वाहिगुरू की फतै गजै हैं।

पिछला भेस देत उतरै हैं, कछ कृपाण केस रख लैहैं ।

इक अकाल की करत बंदगी, शस्त्र विद्या बहु पसंदगी ।

नाम सिंघ बन मजहब खालसा, दोड़ देत सभ जगत लालसा ।

सिर पर चक्र करता तोड़े, औरैं शस्त्र रखते न थोड़े ।

पेटी टोप संजोए चिराने, मण मण लोहा रखत महाने ।

धावा मारत कोस पचासक, लेली लड़ाई के सभ आशक

सोवत फिरत तुरइदे खैहैं, पीठ लगाए न धार पर पैहैं ।

खट रस का वहि स्वाद न जाने, कपड़ा और न तन पर ठाने ।

कमर जांघीया सिर दस्तारा, भूर गिलती बाणा धारा।

घास फूस फल मूल अहारा, खैहैं कच्चे की मृग मार ।

प्यारी औरे वस्त न काई, इक शस्त्र एक चहित लराई ।

मारत इन को हम थक गए, ए नित बढत जात हैं नए ।

मरन मारनों जरा न डर हैं, मौत चराग पतंगे पर हैं।

चाहत निस दिन लैन शहीदी, टरत न रण ते हवै पर गीदी ।

साथ हजारन बीसक लर हैं, टारे टरत न मारे मर हैं।

बल्कि, जु दीन हमारै आवै, मौका पा फिर इन में जावै ।

तिस को भी इह सुधा छकाए, लेत मजहब मैं तुरंत मिलाए ।

मुर्शद इन का वली भयो है इन को आबहयात दयो है।

गज़ब असर तिस का हम देखा, बुज़दिल होवत पर बिसेखा ।

कांण न काहूं की इह राखत, शहनशाह खुद ही को भाखत ।

और सभन को जीव चुरासी, मानत आप ताई अबिनासी ।

तत खालसा गुरू का ज़ाहर, कहत चुरासी ते है बाहर ।

हिंदू अन्ने तुर्क काणे, सिंघ गुरू के सभ ते सयाणें ।

मुसलमान हिंदून ते न्यारी, रीती इन मैं है भल सारी ।

बुत्तप्रस्ती ना इह कर हैं, देवी देव बनाए न धर हैं।

प्रतपीड़ ग्रहपीड़ न मानत, मढ़ी मसाणी को न पछानत ।

गंगादिक तीर्थ नहीं जावैं, सूतक पातक नाहि मनावैं।

जंजूं तिलक न छाया धारैं, शरा हिंदूओं की नहि धारैं।

बोदी धोती तुलसी मालैं, होम श्राद्ध न ख्याहि संभालै।

राम रहीम कृष्ण तज नाम, राखत वाहिगुरू से काम ।

जनमे खुशी, न सोक मरै तैं, लाभ हानि दुख आन परे तैं।

इकसरस खुशी, रहित हैं भारे, प्रभु की भाणा मानत सारे ।

पीर फकीर सिद्ध रिखि मुनी, इन के जानत होए गुनी ।

पंथ ग्रंथ रचै उन जो हैं, उनको ही मानत सभी ऐहैं।

जो गुरू नानक रटी कलाम, ऐन पाक सो अहै ललाम ।

उस की जिल्द रखी बंधवा है, 'गुरू ग्रंथ साहिब' कहि ताहै।

हिंदू कहित जिनैं अवतार, परमेश्वर तन धारे सार ।

परमेशर सभ पूजत मानत, भजन ध्यान उन ही का ठानत ।

सिख उने परमेशर न मानै, परमेशर के सेवक जानैं।

दौलत दुनियां एह न चैहैं, मजहब धर्म पर जान देहैं।

बने रहित सभ सके बरादर, इक को दूसर देवत आदर ।

है इन मैं इतफाक महान, सिख सिख पै वारत प्रान ।

भूख दूख महि रैहैं राज़ी, बांट छकत जे मिल है भाजी । (पंथ प्रकाश, ज्ञानी ज्ञान सिंघ)

(25) सिख – एक भिन्न कौम हैं।

आज फिर 21वीं शताब्दी में पदार्पण करते समय जबकि इस लघु पुस्तिका का हिंदी अनुवाद हो रहा है, हिन्दुओं द्वारा एक बिलकुल अनावश्यक, आधारहीन, असामयिक व बहुत सीमा तक बेवकूफाना वाद – विवाद छिड़ा हुआ है कि सिख एक अलग कौम नहीं है और हिंदू कौम का ही हिस्सा है। अर्थात सिखों का अपना कोई विशेष अस्तित्व नहीं है। आज से लगभग दो दशक पूर्व भी यह विवाद छिड़ा था। इस वाद विवाद के पीछे जो तथ्य व तत्व काम कर रहे हैं, वे वही हैं, जो कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी के क्षेत्र को आज अपनी निजी जागीर समझते हैं । जो आज यह ठान बैठे हैं कि जो उन की हां में हां मिलाएं, केवल उन्हीं को ही भारतीय उपमहाद्वीप में रहने का अधिकार है, और किसी को नहीं। 1947 से पूर्ण ये मुसलमानों के बारे में हूबहू तर्क दे कर उनको भिन्न कौम मानने से इन्कार करते थे जो तर्क आज सिख कौम के बारे दिये जा रहे हैं।

सिख कौम के प्रति इन तथ्यों का रवैया और भी आक्रामक है। ये सिख मजहब को भी एक भिन्न मजहब मानने से इनकार करते ह। सिख मत को जैनियों व कबीर पंथियों को भांति, हिंदू मत का हिस्सा ही बताते है। साहिब श्री गुरू नानक देव जी को ये

एक समाज सुधारक से अधिक कुछ नहीं समझते। गुरू गोबिंद सिंघ जी के खालसा पंथ को केवल एक जत्था ही बताते है, जो बकोल इन के, केवल इन की सेवा और रक्षा के लिए ही स्थापित किया गया था। वे कहते हैं कि अब इसकी बहुत आवश्यकता नहीं रह गई क्योंकि वे समझते हैं कि अब ये अपनी रक्षा करने योग्य हो गए हैं।

हास्यापद बात तो यह है कि जो संप्रदाय सिखों के न्यारे और भिन्न मजहबी और कौमी अस्तित्व को मानने से इन्कार कर रहा है, उसके अपने मजहब की पक्की रूप रेखा अभी तक बन नहीं पाई है। वह इतिहास में कभी भी एक कौम हो कर विचरण नहीं कर पाए और उनका वर्तमान, सामयिक तौर पर गठजोड़ में पिरोया हुआ कौमी अस्तित्व, अजनबी सा प्रतीत होता है। यह अस्तित्व अभी भी डुबकियां खा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व, कलकत्ता में हिंदू मत की परिभाषा करने के लिए एक सम्मेलन बुलाया गया था। इसमें डा. राधाकृष्णन के अतिरिक्त कई प्रसिद्ध हिंदू लीडर एकत्र हुए थे। उनके हजारों प्रयासों के बावजूद हिंदू मत की एक प्रमाणित परिभाषा निश्चित नहीं की जा सकी। अंतत: यह कोशिश इस निर्णय का आ कर समाप्त हो गई कि जो व्यक्ति वर्णआश्रम व्यवस्था में विश्वास करता है, वह हिंदू कहलाने का पक्का अधिकार रखता है। वर्तमान युग का प्रसिद्ध लेखक और चिंतक निराद चौधरी (जो स्वयं एक हिंदू है) अपनी पुस्तक आईलैंड आफ सरसी में लिखता है कि हिंदू कभी भी एक कौम नहीं थे और न ही हैं। भारत का लंबा इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारतीय उप महाद्वीप में शुरू से ले कर अब तक कई प्रकार के संप्रदाय अपने अपने राज्य स्थापित करके रहते आए हैं, जो हमेशा आपस में लड़ते रहे हैं और उनमें एकता की वह भावणा कभी भी उत्पन्न नहीं हो सकी जो एक कौम का मूल और महत्त्पूर्ण अंग होती है।"

सर जाहन सीले के कथानुसार भारत को कौम कहना एक बहुत बड़ी चूक और भुलेखा है। भारत यूरोप और अफ्रिका की भांति एक हिस्से का नाम है जिस में न तो एक मजहब है, न जुबान और न समाज। यहां पर भिन्न भिन्न भाषाओं और भिन्न कौमों का निवास है।"

इसी प्रकार एक और प्रसिद्ध राजनीतिक जाहन सटरैचेअ लिखता है कि भारत में कभी मजहबी या राजनीतिक एकता नहीं हो सकी, जिस के कारण इस को कौम का दर्जा किसी पक्ष से भी नहीं दिया जा सकता।"

इन तथ्यों की मूल सच्चाई को गांधी, नेहरू और अंबेदकर सरीखे लीडर भी स्वीकार रकते है, जब वे भारत वर्ष की वर्तमान एकता के पीछे कई प्रकार की भिन्न-भिन्न अनेकताओं को स्वीकार करते हैं।

यूनिटी इन डायवर्सिटी-यहां अभिन्नता एकता से कहीं अधिक प्रबल और प्रभावशाली है। इस से स्पष्ट होता है कि भारत वर्ष केवल एक भौगोलिक इकाई हैं जिस में कई प्रकार के मजहब, संप्रदाय और कौमें रहती है।

इन संप्रदायों में सिख ही एक ऐसी कौम है, जिनकी कौमी हैसीयत स्पष्ट और साफ-साफ निश्चित की हुई है। सैद्धान्तिक पक्ष के अतिरिक्त यह एक इतिहासिक सत्य के आधार पर भी सर्वप्रमाणित है।

किसी समाजिक, राजनीतिक और धार्मिक संप्रदाय की कौमी हैसीयत को तोलने के लिए आज तक जो भी सिद्धांत राजनीतिक चिंतकों व फिलासफरों द्वारा निश्चित किए गए हैं, यदि उन में से किसी को भी मापदण्ड बना करके, सिख कौम को उस आधार पर मापा-तोला जाए तो इस कौम का एक भी पक्ष खाली नहीं मिलता और सिखों की कौमी हैसीयत साफ, स्पष्ट और प्रभावशाली रंगों में उभर कर सामने आती है।

ज़िमरन राजनीति सिद्धांत के मौलिक चिंतकों में से एक हैं। उन्होंने कौम का जो आधार माना है, उसके अनुसार कौम का ताल्लुक राजनीति से कम और मजहब से अधिक है।

एक और राजनीतिक फिलासफर **रीनान** का कथन है कि कौमी एकता एक जीती जागती भावना और मजहबी सिद्धांतों पर आधारित होती है। इन भावनाओं का आधार बीते समय की साझा और गौरवमय यादों, दूसरों के मुकाबले आपस में एकत्र रहने की तीव्र इच्छा और अपनी सूची विरासत की हर कीमत व हर कुर्बानी देकर सेवा संभाल करने का दृढ़ इरादा है। जिन्होंने एक लंबे

अर्से के लिए आपस में दुख सुख सांझे किये हों और साझे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष किये हों और जिन का भविष्य में सांझा लक्ष्य हो, वह एक कौम की मजबूत बंदिशों में बंधे होते है।"

इसी प्रकार एक और राजनीतिक फिलासफर **सिजविक** के अनुसार किसी संप्रदाय द्वारा एक भिन्न कौम होने के लिये यह जरूरी है कि उस का हर मैंबर इस चेतनता का धारणकर्ता हो कि उस के अपने संप्रदाय के हर सदस्य के साथ विशेष संबंध हैं जो कभी टूट नहीं सकते, चाहे वह राज्य, जिस में वह रह रहे हैं, किसी कारण कभी भी टूट जाए ।"

स्पिंगलर इसी चीज को और भी स्पष्ट तरीके से इस प्रकार प्रकट करता है कौम का आधार, न भाषाई, न राजनीतिक और न ही नस्ली होता है। बल्कि कौम का मूल आधार मज़हबी एकता है।"

इसी प्रसंग में यहां श्री अंबेदकर के विचार प्रस्तुत करने और भी उचित होंगे। उनके अनुसार – कौमीयत एक समाजी भावना है, जिसके प्रभाव में हर मैंबर महसूस करता है कि वह सारे नाती रिश्तेदार हैं। यह साझी भावना दोधारी होती है। एक ओर तो अपने संबंधों का आधार सदा सगे संबंधियो वाला होता है और दूसरी ओर जो इस तरह संबंधी नहीं भी होते, उनके विरूद्ध भी साझे जज़्बात होते हैं कि वे हमारे में से नहीं हैं। आपसी एकता और दूसरों से अभिन्ता इन को दूसरों से अलग करके एक भिन्न कौम की शक्ल दे देती है।"

आओ! जरा उपरोक्त सर्वप्रमाणित सिद्धांतों की दृष्टि में सिखों के कौमी किरदार और भिन्न कौम होने के दावों पर विचार करें ताकि यह निश्चित किया जा सके कि वह एक भिन्न व न्यारी कौम हैं कि नहीं। इन सभी परिभाषाओं में से जो कुछ मत किसी संप्रदाय द्वारा कौमी हैसीयत का धारणकर्ता होने के लिए निश्चित किए गए हैं, वे इस प्रकार है :

(1) धार्मिक एकता

(2) सामाजिक अभिन्नता और चेतन्नता

(3) साझी गौरवमय पृष्ठभूमि, जिस का आधार वे साझे लक्ष्य हैं जिन की पूर्ति के लिए साझे तौर पर एक लंबे अर्से के लिए एक संप्रदाय के मैंबरों ने, संघर्ष और कुर्बानियां की हो तथा जिन की याद एक गौरवमय विरासत की सूरत धारण की गई हो।

(4) इस साझी विरासत की रक्ष और विकास के लिए इस संप्रदाय का हर मैंबर, हर वक्त और हर दशा में तत्पर हो और जरूरत पड़ने पर उस लक्ष्य के लिए, अन्य सारे प्रकार के सबंध व रिश्ते कुर्बान करने को तैयार हो जाए।

(5) किसी खास समय पर आपसी छोटे – मोटे मतभेंदों के बावजूद उपरोक्त तथ्यों के आधार पर, उस संप्रदाय की आंतरिक एकता जागृत ज्योति की सूरत में हमेशा जगमग कर रही हो और किसी साझे खतरे की दशा में आपसी मतभेद भुला कर हर मैंबर, वर्ग व विरासत की रक्षा हेतु तत्पर हो जाए ।

(6) भविष्य में किसी साझे लक्ष्य का होना और उसको प्राप्त करने की तीव्र इच्छा होना ।

सिख कौम का अपना भिन्न, न्यारा और स्वतंत्र मजहब है। इस की आधारशिला पंद्रवीं शताब्दी में साहिब श्री गुरू नानक देव जी द्वारा रखी गई थी । उन का इस संसार में प्रादुर्भाव अकालपुरख की आज्ञा के अनुसार इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हुआ था। इस मजहब की संपूर्ण दशा लगभग 220 साल के योजनाबद्ध विकास के पश्चात, साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी द्वारा 1699 ई. में अनंदपुर साहिब में, अमृतपान की विधि प्रदान करने के पश्चात खालसा की शक्ल में सामने आई। सिख मत शुरू से ही वर्णधर्म, कर्मकांड ऊंच – नीच, मूर्ति और देवी पूजा, रस्मों – रिवाजों और अन्य हिंदू रीतियों में विश्वास नहीं करता था, इसलिए हिंदू ब्राहमणवाद हमेशा इस के विरूद्ध ही रहा है और यही मूल कारण है कि हिंदू संप्रदायवादी इस के स्वतंत्र धार्मिक न्यारेपन व अखंडता से, श्री गुरू नानक साहिब जी के समय से लेकर अब तक, इनकार करते चले आ रहे हैं। इस स्तर पर इन का विरोध बहुत खोखला और कहीं – कहीं हास्यापद भी होता है। एक ओर तो इन के द्वारा यह कहा जाता रहा है कि सिख मत हिंदू मत का ही अंग है और गुरू साहिबान

केवल हिंदू मत की त्रुटियों को ही गांठना चाहते थे। दूसरी ओर श्री गुरू नानक देव जी से लेकर दसम पातशाह तक इन के द्वारा सिख गुरू साहिबान के विरूद्ध मुगल अधिकारियों के पास न केवल शिकायतें ही की जाती रहीं है, बल्कि उनके विरूद्ध समय की हकूमत के पास साजिशें की जाती रही हैं, जिनके परिणाम स्वरूप गुरू रामदास जी को शाही दरबार में बुलाया गया। पांचवे पातशाह जी की शहीदी हुई। गुरू हरिराय साहिब और गुरू हरिकृष्ण साहिब जी को हानि पहुंचाने के लिए दिल्ली बुलाया गया।

दसम पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंघ जीं को अपने जीवन में 16 लड़ाइयां लड़ने पर मजबूर होना पड़ा, जिन में से 14 लडाइयां केवल हिंदू राजाओं द्वारा ही आरंभ की गई। इनमें से दो लड़ाइयां केवल हिंदू तथा मुगल सेनाओं की साझी मिली भगत का परिणाम थीं। छोटे साहिबज़ादों की शहीदी के पीछे भी प्रमुख तौर पर हिंदू तत्व ही काम कर रहा था और बाद में जब खालसा, जीवन-मृत्यु की लड़ाई में जूझ रहा था तो लखपत राए और जसपतराए जैसे हिंदुओं ने खालसा का खुरा खोज मिटाने के लिए न केवल मनसूबे ही बनाए बल्कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एड़ी चोटी का जोर भी लगाया। इसके परिणाम स्वरूप हजारों सिख शहीद हो गए । क्या यह पूछा जा सकता है कि यदि सिख गुरू साहिबान, हिंदू समाज सुधारक ही थे तो हिंदुओं द्वारा उन का इतना सख्त विरोध क्यों हुआ? इन हिंदुओं के अनुसार समाज सुधारक गुरूओं द्वारा जो शक्ल खालसे की सूरत में समाज को दी गई है, उस को देख कर हिंदुओं को चिढ़ क्यों आती है? इस सुधरी हुई सूरत और सुधरे हुए सिख नियमों को हिंदू ग्रहण क्यों नहीं कर लेते?दशम पातशाह द्वारा प्रदत्त ककार तो इन के लिए पुराने हो गए है, जिनकी, इन के कथानुसार जरूरत ही नहीं। परंतु जनेऊ पुराना नहीं हुआ। बात बिल्कुल साफ और स्पष्ट है कि सिख मत के विरोध के पीछे जो भावना काम कर रही है, उस का उद्देश्य सिखी को चोट पहुंचाना है ताकि इस के स्वतंत्र स्वरूप और न्यारेपन को धुंधला करके, खत्म किया जा सके ।

सिख मजहब के न्यारे स्वरूप और विलक्षणता के बारे में तो गुरू साहिबान के अपने मुबारक शब्द मौजूद हैं जिन के प्रकाश में किंचित मात्र भी शक नहीं रह जाता कि सिख हिंदू नहीं है और उन का हिंदुओं, मुसलमानों और इसाइयों की भांति अपना एक भिन्न धर्म है, जिस के अपने सिद्धांत है, अपने ग्रंथ है, अपने तीर्थ हैं, अपना समाज है और अपनी रहित मर्यादा है - जिसके कारण उनकी अपनी कौमी हैसीयत है। गुरू गोबिंद सिंघ जी का यहां तक आदेश है कि :

जब लग खालसा रहे निआरा –

तब लग तेज दीउ मैं सारा ।

जब दह गहै बिपरन बाह मति की रीत।

मैं न करूं इन की प्रतीत ।

इन तथ्यों की दृष्टि में किंचित मात्र भी शक नहीं रहना चाहिए कि सिख धर्म की विलक्षणता इस की समाज के प्रति समर्पित और दृढ़ जिम्मेवारियों में भी अंतर है। सिख मत, दूसरे मतों के विपरीत, न तो मानवीय जीवन को कर्मों का भोग और न ही संसार को पापों का घर मानता है। इसलिए सिख मत में संसार के त्याग, निजी कल्याण व आत्मिक मुक्ति के लिए उपदेश दिए गए है। हठ, तप और योग आदि की न केवल सराहना ही की गई है बल्कि उसका विरोध भी किया गया है। इस के विपरीत सामाजिक सेवा और समाज सुधार, सिख मत के मौलिक और अभिन्न अंग है। समाज सेवा द्वारा मुक्ति का संकल्प केवल सिख मत में ही मिलता है।

विधि दुनिआं सेव कमाईऐ।।

ता दरगहि बैसणु पाईऐ ।। (सिरी रागु महला ३, पृ २६)

इन सिद्धांतों का समूचे तौर पर क्रांतिकारी रूप धारण कर जाना स्वाभाविक और आवश्यक था। इसी कारण 17वीं व 18वीं शताब्दी में सिख सिद्धांत एक ऐसी शक्तिशाली लहर का रूप धारण कर गया, जिस ने हजारों सालों बाद इतिहास का मुंह मोड़ कर रख दिया।

निजी और समाजिक सर्वपक्षीय उन्नति, सिख मजहब के मुख्य उद्देश्य हैं। इसी कारण साहिब श्री गुरू नानक देव जी से

लेकर श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी तक, हर गुरू साहिबान द्वारा समाज सुधार पर विशेष बल दिया जाता रहा है। ऊंच – नीच, छूत – छात, कर्मकांड, हर प्रकार के भेदभाव और अन्याय का भरपूर विरोध किया गया है और सती होने, लड़कियों को पैदा होते ही मार देने, भीख मांगने, बाल विवाह, विधवा विवाह, औरतों के संग दुर – व्यवहार, तंबाकू और शराबखोरी जैसी समाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए गुरू साहिब ने विशेष प्रयास किये। इन में से कई बुराइयों को तो सिखी में बज्जर पाप (वज्र पाप) करार दिया गया है। इन बुराइयों से इतर एक न्यारे सिख समाज को नए और स्वस्थ चिन्हों पर स्थापित करने के लिए सिख गुरू साहिबान द्वारा शादी, ग़मी और जन्म मृत्यु आदि की मूल रस्मों को नये सिरे से स्थापित किया। दसम पातशाह ने गुरू संगत को खालसा की सूरत प्रदान करके और उस को रहित मर्यादा का धारणकर्ता बना कर, सिख समाज को हर पक्ष से एक न्यारा और विलक्षण स्वरूप प्रदान कर दिया। उसके प्रत्येक सदस्य की अपनी विलक्षण शक्ल – सूरत, जीवन – शैली, रहित मर्यादा, मजहबी अकीदे और रस्मों – रिवाज हैं।

मजहबी और सामाजिक विलिक्षणता के अतिरिक्त सिख कौम की अपनी विलक्षण गौरवमई इतिहासिक विरासत भी है जो हर जिंदा कौम की जी ज़ान होती है। श्री गुरू अर्जन देव जी की शहीदी से लेकर नकली निरंकारियों के हाथों कुछ दशक पूर्व ही अमृतसर, दिल्ली और कानपुर में हुई शहदियों तक के लंबे इतिहास के हर पन्ने पर व अभी 34 वर्ष पूर्व आखिल भारतीय स्तर पर हुए 84 ई. 1984 ई के सिख विरोधी दंगो में सिखी की गहरी और मुंह बोलती छाप है जिस ने इस कौम के लिए एक ऐसी गौरवमय विरासत की सूरत अख्यितार कर ली है जिस की मिसाल सारे मानव इतिहास में नहीं मिलती है। इन शहीदियों और प्राप्तियों के पीछे वे अलौकिक और लासानी भावनाएं काम कर रही है जिन की ज्योति श्री गुरू नानक देव जी से ले कर पिछले 500 सालों से जगमग कर रही है। इस के प्रभाव में हर सिख हर समय, हर अन्यास और अत्याचार के विरूद्ध न केवल अपने लिए ही, बल्कि हर निरीह के लिए अपने आप को न्योछावर करने तक को तत्पर रहता है। इसी भावना में सदियों से कुचले जा रहे दुर्बल और निरीह लोगों में ऐसा बल भर दिया था, जिसने हजारों साल बाद पद दलितों को गौरव, निराश्रितों को आश्रय और अपमानितों को मान प्रदान किया और मनुष्य के सिर पर दस्तार की शक्ल में इज्जत और आबरू का ताज रखा। यह इतिहास केवल सिखों, व केवल सिखों ने गुरू साहिब की कृपा द्वारा, सिख सिद्धांतों की रक्षार्थ अपने बाहुबल और अपने लहु से लिखा और सींचा और इसी कारण इस के हर पन्ने पर इन की मुंह बोलती छाप है।

सिख कौम में कुर्बानियों और प्राप्तियों को यह गौरवमय विरासत, जो महत्त्व रखती है उस का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि हर सिख, चाहे वह दुनियां के किसी भी कोने में हो, अपने दो समय की अरदास में इन शहीदों और शूरवीरों को इस प्रकार नमस्कार करता है :

पंज प्यारे, चार साहिबज़ादे, चाली मुकते, हठियां, जपीयां, तपीयां, शहीदां – मुरीदां, सचिआरिआं – पिआरिआं, जिन्हां गुरसुखां नाम जपिआ, वंड छकिया, देग चलाई, तेग वाही, धर्म हेत सीस दित्ते, बंद बंद कटवाए खोपरियां, उतरवाइयां, चरखड़ियां ते चढ़े, आरिआं नाल तन चिरवाए, तूंबातूंबा कीते गए, जीउदे जी देगां विच उबाले गए अते अनेक प्रकार दे होर असह ते अकहि कष्ट सहारे, सिखी सिदक केसां स्वासां संग निभाइआ, उन्हां गुरमुख प्यारियां, सिंघां सिघंणीयां दी अपार कमाई बल ध्यान धर के, बोली जी श्री वाहिगुरू!"

है कोई दुनियां की ऐसी कौम जिस के प्रत्येक सदस्य के हृदय में अपनी समूची विरासत के लिए इतनी गहरी और भाव पूर्ण भावना की ज्योति इस तरह रोशन होती हो। यहां सिखी सिदक केसां स्वासां संग निभाइआ" विशेष महत्व रखते हैं क्योकि मूल उद्देश्य हमेशां सिख कौम की मौलिक और सच्चे व निर्मल मूल्यों की रक्षा ही रहा है।

इस प्रकार स्वतंत्र और विलक्षण मजहबी सिद्धांतों और सामाजिक मूल्यों पर आधारित सिख कौम, एक विलक्षण और गौरवमय विरासत की वारिस है जिस का अपना निखरा हुआ स्वरूप, विश्व इतिहास के पन्नों के अतिरिक्त हर सिख हृदय में अंकित है। सिख कौम का हर सदस्य, इस को हर पल और हर श्वास याद करता है और इस से प्रेरित हो कर अपना भविष्य बिल्कुल उन्हीं पदचिन्हों पर निर्मित करने की चाह रखता है। इस साझे गौरवमय विरासत के मौलिक मूल्यों के आइने पर जरा सी भी लकीर का

खतरा उत्पन्न हो जाने पर सिख हर स्थान पर, हर कुर्बानी देने को तैयार हो जाता है। यही एक जिंदा कौम की मौलिक पहचान होती है।

किसी कौम के इतिहास में समय – समय पर छोटे – मोटे मतभेदों का उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही है। अपना राज्य चले जाने के पश्चात गुलामी के कारण सिख कौम भी इस दोष का शिकार रही है और आज भी इससे अछूती नहीं है। ये मतभेद सिख कौम की अधोगति का प्रतीक है, परंतु फिर भी इस वास्तविकता से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जब कभी भी किसी सांझे खतरे व विपति के समय सिख कौम में मौलिक, सच्चे व निर्मल मूल्यों को ललकारा गया है तो समूची कौम आपसी मतभेदों को भुलाकर, अपनी साझी गौरवमय विरासत की रक्षार्थ उस के मुकाबले पर डट कर सामने आती रही है और तब तक उसने दम नहीं लिया, जब तक व खतरा दूर नहीं होता रहा। इसी भावना के अधीन शाहबाज सिंघ और सुबेग सिंघ, जो किसी कारण उस समय की सरकार से सहयोग करते रहे थे, समय आने पर अपनी कौमी विरासत की रक्षार्थ चखड़ियों पर चढ़ कर तूंबा तूंबा हो गए, परन्तु इस विरासत पर आंच नही आने दी। इसी भावना के अकाली लहर का रूप धारण करके शक्तिशाली अंग्रेजी सम्राज्य को सिखों के सामने झुकने पर मजबूर किया। आज भी भले ही कोई सिख चाहे वह अकाली है या कांग्रेसी, सोशलिस्ट है या कोई और, सिख के नाते नकली निरंकारियों अथवा किसी सिख विरोधी अभियान का पक्षधर नहीं हो सकता।

उपरोक्त सिद्धांतों के अतिरिक्त जिंदा कौम के लिए भविष्य में अपने समूचे साझे लक्ष्य का होना और उसका हर मूलय पर प्राप्त करने का दृढ़ इरादा होना आवश्यक माना गया है। इस स्तर पर भी सिखों का कौमी स्वरूप दुनियां की बाकी कौमों की तुलना में अधिक उघड़कर पर सामने आता है। अपने न्यारे पंथक स्वरूप के आधार पर पंथ द्वारा अपनी किस्मत का मालिक स्वयं ही होना चाहिए, सिख पंथ के सिद्धांतों और परंपराओं में बिना किसी लाग लपेटके बिल्कुल साफ साफ निश्चित किया हुआ है। मीरी – पीरी के सिद्धांत का मूल आधार सिख पंथ की सर्वपक्षीय और संपूर्ण स्वतंत्रता है। इसी कारण चाहे मुगल रहे हों या अफगान, अंग्रेज रहे हों या कोई और, अभी तक सिख कौम की मौलिक संस्थाओं पर उन का आदेश या दबदबा कभी नही चल पाया और न ही चल सकता है। जिस किसी ने कभी भी सिख कौम द्वारा निश्चित अंतिम सीमा का उल्लंघन करने का प्रयास किया है, चाहे वह औरंगजेब था या अब्दाली, अंग्रेज था या कोई अन्य, अंतत: हार हमेशा उसी की ही हुई है और सिख कौम की स्वतंत्रता को संपूर्ण तौर पर कभी समाप्त नहीं किया जा सका।

इसी कारण आजादी की भावना हर सिख के रोम – रोम में रम रही है और इस कौम के भविष्य में अपने लक्ष्य का मूल आधार भी यही है। इस लक्ष्य को और इस को हर मूल्य पर प्राप्त करने के दृढ़ इरादे की, सिख कौम हर रोज हर उचित समय पर नगारे की चोट से ऊंचे स्वर में ध्वनि बुलंद करती है :

राज करेगा खालसा, आकी रहे न कोए ।

पहाड़ हो या मैदान, जंगल हो या शहर, देश हो या प्रदेश, जल हो या थल, दुख हो या सुख, और युद्ध हो या शांति, खालसे का यह लक्ष्य और उसको प्राप्त करने का इरादा, हर स्थान पर हमेशा ऐसे ही गुंजायमान रहता है।

भविष्य में अपना लक्ष्य दुनियां की कोई कौम इतने साफ और स्पष्ट शब्दों में आज तक नहीं बना सकी और न ही उसको प्राप्त करने के लिए इतने दृढ़ इरादे की धारणकर्ता बन पाई है।

अपना मजहब, अपना समाज, अपनी इतिहासिक विरासत, इस विरासत के लिए चेतन्नता, उसको सुरक्षित और विकसित करने का इरादा और भविष्य में एक साझे लक्ष्य का होना, ये सारे के सारे लक्षण समूचे तौर पर केवल सिख कौम में मिलते हैं। दुनियां की किसी अन्य कौम में नहीं। दुनियां की हर कौम में इन में से किसी न किसी की हमेशा कमी रही है। यह केवल सिख कौम की ही विशेषता है कि वह राजनीतिक सिद्धांतों पर न केवल भिन्न – भिन्न, बल्कि समूचे तौर पर भी पूरी उतरती है, जिस के कारण इस को कौम द्वारा मान्यता देने से इन्कार करना, दिन को दिन मानने से इन्कार करना है।

इन सभी सिद्धांतो के अतिरिक्त भी कुछ ऐसे गुण सिख कौम की विरासत में आए हैं जिन के आधार पर सिख कौम को दुनियां की एकाएक संपूर्ण और पूर्ण कौम कहा जा सकता है। उनमें से कुछ के गुण इस प्रकार है।

(1) हर सिख नर, नारी का नाम एक समान है, सिंघ और कौर।

(2) हर सिख अपने आपको एक साझे परिवार का सदस्य समझता है जिसका पिता श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी और माता साहिब कौर जी है।

(3) हर सिख की शक्ल सूरत, एक समान है जो लाखों में भी पहचानी जा सकती है।

(4) हर सिख, चाहे कहीं पर भी हो, एक दूसरे को मिलते समय वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह बुलाता है।

(5) हर सिख अपने हर गुरभाई के कल्याण की कामना चाहे वह कोसों मी दूर बैठा हो, अपनी नित्य प्रति की अरदास में इस प्रकार है :

जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रछिया – रियायत ।

(6) इसी प्रकार अपनी समूची विरासत की संभाल और उसके विकास का इरादा, प्रत्येक सिख अपनी अरदास में इस प्रकार प्रकट करता है :

चौकीआं, झंडे, बुंगे, जुगो, जुग अटल ।।

यहां पर जिस बात का विशेष वर्णन करना जरूरी है, वह यह है कि सिख केवल गुरद्वारों की रक्षा रियायत की ही प्रार्थना नहीं करते बल्कि अपने झंडे और बुंगे जो राजनीतिक अधिकारों का प्रतीक होते हैं, उनकी सेवा संभाल भी मांगते हैं।

इन सैद्धांतिक पक्षों के अतिरिक्त पाठकों का ध्यान इस इतिहासिक सत्य की ओर ले जाना भी जरूरी है कि 18 वीं शताब्दी और 19वी शताब्दी में लगभग सौ साल सिख कौम, काबुल से ले कर यमुना तक और तिब्बत से लेकर सिंध तक, एक शक्तिशाली स्वतंत्र राज्य की मालिक रही है। महाराजा रणजीत सिंघ के समय पर, खालसा सरकार की बाला दस्ती को अंग्रेजों के अतिरिक्त फ्रांस, अमरीका, रूस, हंगरी, स्पेन, चीन, नेपाल, लंका, काबुल और ईरान के अतिरिक्त समकालीन दुनियां की लगभग सारी छोटी – बड़ी शक्तियां तस्लीम करती हैं। इन में कइयों के साथ तो खालसा सरकार की बाकायदा संधिया भी थीं।

राजपलट होते रहते हैं। पिछली अर्द्ध शताब्दी में यूरोप में अनेक मुल्कों की सीमाएं संकुचित व विकसित हुई हैं। कई कौमें सामयिक तौर पर गुलाम भी हो जाती हैं। परंतु उनकी कौमी हैसीयत कभी समाप्त नहीं होती। यहूदी एक जिंदा मिसाल है।

इन तथ्यों की रोशनी में कोई मूर्ख या मूढ़ ही सिख कौम की भिन्न हैसीयत की झुठलाने का प्रयत्न कर सकता है।

प्रकाशक:

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)

लॉच करता

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेंबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

सं जसबीर सिंघ

Ph. : (0172-2696891), 09988160484